KNOWLEDGE IS POWER

सृजनात्मक लेखन ही लक्ष्य...

रत्नांक

महाविद्यालय पत्रिका, प्रथम अंक : मार्च, 2017

RATNANK

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़

संरक्षक
CA सुभाष अग्रवाल

परामर्श
डॉ. वन्दना भटनागर
डॉ. शैलेन्द्र पाटनी

सम्पादक
डॉ.हुकम सिंह चम्पावत

सम्पादन समिति
डॉ. मितेश जुनेजा
प्रीति सलूजा
निहारिका शर्मा
साक्षी जैन

अंजली जैन
रिंकू मालाकार
हर्षिता शर्मा
श्वेता माखिजानी
अदिति बंसल

रेखा चित्र
रवि सोनी
ख्याति जैन
मृगांक भारद्वाज

टंकण
नेहा शर्मा

विज्ञापन
अमित दाधीच
राजेश जैन

एक शिक्षा स्वप्न

पूज्य 'बाबासा' को कोटि-कोटि नमन !

विशाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस-पास की निवासित समस्त बालिकाओं व नारियों में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा कन्या शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्त्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं स्वयं को सक्षम, सफल बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्त्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जस्वित करता ऐसा अद्भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

सन्देश

अपने मन के उद्‌गारों को अभिव्यक्त करने का सर्वथा सक्षम व सशक्त माध्यम लेखनी है। यही अनवरत प्रयास हमारे महाविद्यालय के विद्यार्थी एवं संकाय सदस्य अपनी पूर्ण निष्ठा से कर रहे हैं, मुझे पूर्ण विश्वास है एक दिन इन प्रबुद्धजनों के सुगढ़ित विचार शब्द बनकर इस संसार सागर में विचरण करते हुए सफलतम शिखर की बुलंदियों तक पहुचेंगे। मैं यही अनंत कामना मन में लिए अत्यंत प्रसन्न हूँ कि हमारे महाविद्यालय द्वारा ''रत्नांक'' पत्रिका जिसका नामकरण ही अपने आप में ज्ञानआभा का प्रकाशमान अनुपम उदाहरण है, इसके प्रकाशन से न केवल विद्यार्थियों का ज्ञानकौशल अभिव्यक्त होगा अपितु समाज में एक सन्देश प्रेषित होगा कि महाविद्यालय उन्नत, उत्तम शिक्षा की ओर अपने कदम बढ़ा रहा है।

"रत्नांक" पत्रिका के प्रथम प्रकाशित अंक हेतु मैं संपादक मंडल एवं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को असीम बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ साथ ही आशा करता हूँ कि महाविद्यालय इस प्रकार के पुनीत शैक्षिक कार्य पूर्ण मनोयोग से करता हुआ उतुंग शिखर पर सुशोभित रहेगा।

अशोक पाटनी
अध्यक्ष

सन्देश

एक सतत् प्रयत्नशील अध्येता अपने जीवन में शिक्षा, अनुशासन एवं चरित्र इन तीन आदर्शों को स्थापित कर स्वयं के जीवन को सफल ही नहीं बनाता अपितु एक सफल समाज व राष्ट्र का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होता है। इन्हीं आदर्शों को कन्या शिक्षा से जोड़ते हुए हमारी बेटियों में इन मूल्यों की स्थापना हेतु सदैव हमारा महाविद्यालय संकल्पित है। मुझे इस बात पर प्रसन्नता एवं गर्व है कि जिन आशाओं और विश्वास के साथ नारी शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु हमारे संस्थान की स्थापना की गई थी वह इस दिशा में बखूबी प्रशंसनीय कार्य करते हुए समाज में अपना शैक्षणिक परचम फहरा रहा है।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित 'रत्नांक' पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मकता से परिपूर्ण होगी बल्कि यह पत्रिका एक नवीन सोच के साथ समाज हेतु ज्ञान की एक सुप्रकाशित दीपज्योति होगी। मैं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को इसकी अनेक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि आप सदैव इस दिशा में प्रगति कर संस्थान का नाम रोशन करते रहेंगे।

CA सुभाष अग्रवाल
सचिव

हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'रत्नांक' के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से शिक्षा के साथ-साथ खेल, साहित्य एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का होना अतिआवश्यक है। इन गतिविधियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व के पक्ष उद्घाटित एवं विकसित होते हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थी पाठ्यक्रम की दीर्घता के कारण अपना मौलिक लेखन नहीं कर पाता व अपनी प्रतिभा को वहीं दबा हुआ महसूस करता है, अत: हमारा दायित्त्व है कि हम सुषुप्त प्रतिभाओं को लेखन की दृष्टि से जाग्रत करने का प्रयास करें। इसी सुविचारणा का स्वप्न संजोये महाविद्यालय परिवार ने इस पत्रिका के प्रकाशन का मानस बनाया है। इसके माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थी अपनी मौलिक लेखन प्रतिभा को निखारने में सक्षम होंगे एवं इस नवलेखन से यह संस्थान अनवरत उच्चशिक्षा में नए कीर्तिमान स्थापित करता हुआ सुशोभित रहेगा।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित मैं पूरे संपादक मंडल को अनेक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ साथ ही आशा करती हूँ कि यह पत्रिका विद्यार्थियों ही नहीं अपितु सर्वपाठकों के लिए ज्ञानप्रदायिनी शक्ति सिद्ध होगी।

डॉ. वन्दना भटनागर
प्राचार्य

रत्नांक

"**रत्नांक**" शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थो से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है। इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह् व भाग्य माना जाता है। अत: 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रतन के लिए अंक' या 'रतन की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदणीय श्री रतनलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। रत्नांक शब्द में दो वर्णो यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महत्ता प्रतिपादित है इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रतनलाल जी का स्मरण कराता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

'रत्नांक' शब्द को सामासिक दृष्टि से समझा जाये तो प्रथम अर्थ रतन के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रतन के अंक में अर्थात् रतन की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासा श्री रतनलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासा की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। महाविद्यालयी पत्रिका के सम्बन्ध में हमारा यह प्रयास है कि प्रथम अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालयी पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासा एवं परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को समर्पित है। अत: इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

सम्पादकीय

इस सृष्टि पर जन्म लेने वाले प्रत्येक मनुष्य में कुछ विशिष्ट प्रतिभा अवश्य होती है, इसी से वह इस सृष्टि पर स्वयं को सुस्थापित रखता है। आपने सदैव यह अवश्य सोचा होगा कि मनुष्य में वैचारिक अभिव्यक्ति की एक ऐसी अद्भुत शक्ति होती है जिससे वह अपनी बात, अपने विचार दूसरों तक प्रेषित करने में सक्षम होता है। यह विचार कभी वाणी के माध्यम से तो कभी लेखन के माध्यम से प्रेषित कर स्वयं का ऊर्जस्वित स्वरूप दूसरों के सम्मुख रखता है। आज की इस आधुनिकता की दौड़ में वह वाणी से तो अपनी बात सहजता से कह देता है, परन्तु लेखन की दृष्टि से उसकी लेखनी थोड़ी क्षीण होती हुई शिथिल सी प्रतीत होती है। लेखन की क्षीण होती हुई इन्हीं क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों की रूचि लेखन में बढ़ सके इस ओर कदम बढ़ाते हुए महाविद्यालय के समस्त संकाय सदस्यों ने सार्थक प्रयास कर विद्यार्थियों को इस ओर लाने का विनम्र प्रयास 'रत्नांक' पत्रिका के माध्यम से किया है जो एक अनूठी एवं अद्वितीय पहल है। इससे प्रत्येक विद्यार्थी की लेखन में रूचि बढ़ेगी साथ ही वह इस क्षेत्र में अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकेगा।

'रत्नांक' पत्रिका का यह प्रथम अंक नवविचारों की नवीन रचनात्मकता का पल्लवित, पुष्पित, सुगंधित पिटारा है जिसमें कविता, कहानी, लेख, नवज्ञान प्रसंग व नवविचार हैं। इसमें विद्यार्थियों ने न मात्र अपना लेखन मजबूत किया अपितु ज्ञानमार्ग के लेखन स्वरूप को पुष्ट करते हुए अपनी रचनात्मकता की मिसाल को कायम किया है। इसके पहले ही अंक में विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों की लेखनी ऊर्जा को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो यह यात्रा एक दिन महाविद्यालय को शिक्षा जगत में एक नवीन एवं विशिष्ट पहचान से साक्षात्कार कराने में सक्षम होंगी।

यह सम्पूर्ण प्रयास हमारे महाविद्यालय के सचिव, प्रबन्धन समिति के सदस्यों व प्राचार्य का है जिनके मार्गदर्शन से सर्वस्व संभव हो सका। मैं इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए श्रद्धावनत हूँ। मैं हृदय से सम्पादक मण्डल व सर्वजनों का आभारी हूँ जिनके लेखन एवं मार्गदर्शन से यह कार्य अपने मुकाम तक पहुँच पाया, साथ ही आशा एवं अपेक्षा है कि ऐसा सौहार्द्र व सहयोग सदैव बना रहेगा।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत

हमारी बेटियाँ

एक बार एक संत की कथा में एक बालिका खड़ी हो गई। चेहरे पर झलकता आक्रोश... संत ने पूछा – बोलो बेटी क्या बात है ?

बालिका ने कहा– महाराज हमारे समाज में लड़कों को हर प्रकार की आजादी होती है। वह कुछ भी करे, कहीं भी जाए उस पर कोई खास रोक–टोक नहीं होती। इसके विपरीत लड़कियों को बात बात पर टोका जाता है। यह मत करो, यहाँ मत जाओ, घर जल्दी आ जाना आदि।

संत मुस्कुराए और कहा– बेटी तुमने कभी लोहे की दुकान के बाहर पड़े लोहे के गार्डर देखे हैं ?

ये गार्डर रात–दिन, सर्दी, गर्मी, बरसात इसी प्रकार पड़े रहते हैं। इसके बावजूद भी इनका कुछ नहीं बिगड़ता और इनकी कीमत पर भी कोई अन्तर नहीं पड़ता। लड़कों के लिए कुछ इसी प्रकार की सोच है समाज में।

अब तुम चलो एक ज्वेलरी शोरूम में। एक बड़ी तिजोरी, उसमें एक छोटी तिजोरी, उसमें भी छोटी तिजोरी और उसमें रखी छोटी सुन्दर सी डिब्बी में रेशम पर नजाकत से रखा चमचमाता हीरा। क्योंकि जौहरी जानता है कि अगर हीरे में ज़रा भी खरोंच आ गई तो उसकी कोई कीमत नहीं रहेगी।

समाज में बेटियों की अहमियत भी कुछ इसी प्रकार की है। पूरे घर को रोशन करती झिलमिलाते हीरे की तरह। ज़रा सी खरोंच से उसके और उसके परिवार के पास कुछ नहीं बचता। बस यही अन्तर है लड़कियों और लड़कों में। पूरी सभा में चुप्पी छा गई। उस बेटी के साथ पूरी सभा की आँखों में छाई नमी साफ–साफ बता रही थी लोहे और हीरे में फर्क। अत: आप एक बेशकीमती हीरा हो। जिसकी हिफाजत जरूरी है।

इस प्रकार हमारी समस्त ''वंडर गर्ल्स'' वो बेशकीमती हीरा है। जिनकी हिफाज़त हमारा दायित्व है।

CA **सुभाष अग्रवाल**

जैव विविधता के संरक्षण में सहायक धार्मिक मान्यताऐं

जैव विविधता' शब्द 1985 में वॉटर जी. रोजेन ने दिया था। जैव विविधता का अर्थ विभिन्न प्रकार के जीवों एवं वनस्पतियों का पारिस्थितिक तंत्र से लिया गया है। जैव विविधता की दो प्रमुख अवधारणा है–

(1) अनुवांशिक विविधता।

(2) पारिस्थितिक विविधता।

एक ही प्रजाति के विभिन्न सदस्यों के मध्य एवं विभिन्न प्रजातियों के मध्य पाई जाने वाली आनुवांशिक परिवर्तिता आनुवांशिक विविधता कहलाती है, तथा किसी जैविक समुदाय में पायी जाने वाली प्रजातियों की संख्या पारिस्थितिक विविधता कहलाती है। भारत में करीब 32 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत सम्पन्न है। यहां विभिन्न जंतुओं की लगभग 65000 प्रजातियां पाई जाती है। जिसमें 50000 अकेले कीटों की प्रजातियां है, मोलस्का की 4000, अकशेरूकीय प्राणियों की 6000, मछलियों की 2000, उभयचरों की 140, सरीसृपों की 450, पक्षियों की 1200, स्तनधारियों की 350 एवं वनस्पतियों की 45000 प्रजातियां पाई जाती है। मनुष्य आधुनिकता के अंधे दौर में जीवों एवं वनस्पतियों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। प्रकृति के अतिरेक दोहन से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है। मानवीय संवेदनाओं की कमी के कारण प्रजातियों की विलुप्तीकरण की दर बढ़रही है।

धर्म मनुष्य की पहचान है। समस्त धर्मो का मूल सिद्धांत प्रकृति एवं मनुष्य के बीच समन्वय है। धार्मिक मान्यताएं हमेशा से प्रकृति के संरक्षण में निहित है। कोई भी धर्म प्रकृति के विरूद्ध चल कर अस्तित्व में नहीं रह सका है और न ही रह सकता है।

हिन्दू मान्यता के अनुसार मनुष्य का अस्तित्व ही प्रकृति से निर्मित है, अत: इस धर्म की प्रत्येक मान्यता एवं परम्परा में प्रकृति का संरक्षण केंद्र बिंदु है। हिन्दू धर्म की हर एक मान्यता एवं परम्परा में जैव विविधता के सन्देश है। इस धर्म में देवताओं के अवतार ही जैव विविधता पर आधारित है। विष्णु का मत्स्य अवतार, कूर्म अवतार, वराह अवतार, हनुमानजी का वानर रूप, जामवंत, जटायु आदि सभी अवतार जैव विविधता का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। हिंदू धर्म के हर त्योहार में किसी न किसी जंतु या वनस्पति के संरक्षण का सन्देश है। नवमी को आंवले के वृक्ष की पूजा, वट सावित्री को बरगद की पूजा, दशहरा पर शमी वृक्ष की पूजा, नागपंचमी को सर्पो की पूजा, गणेश पूजन में हाथियों एवं चूहों का संरक्षण, दुर्गा पूजा में शेरों का संरक्षण का संदेश यी त्योहार देते है।

शिव जी तो साक्षात् जैव विवधता के अधिष्ठाता है। हिमाचल की सम्पूर्ण जैव विविधताओं के संरक्षण माने जाते हैं। रामचन्द्रजी ने 14 वर्ष वनवास करके सम्पूर्ण वनवासियों एवं वन सम्पदाओं को राक्षसों से सुरक्षित किया था। कृष्ण ने गोवर्धन की पूजा करवा कर गोकुलवासियों को सन्देश दिया था कि जैव विविधताओं के संरक्षण से ही उनकी सुरक्षा जुड़ी हुई है। समुद्र मंथन तो जैव विविधताओं का आदर्श उदाहरण है। इसमें जितने भी रत्न निकले सभी जैव विविधताओं का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। नवदुर्गा एवं कजलियों पर जवारों का रोपण, मछलियों को दाना एवं चीटियों को आंटा खिलाना, अन्नकूट पर गौ की पूजा, दीपावली पर गांवों में मई में वनदेवी की पूजा ये सभी मान्यताएं एवं परम्पराएं प्राणियों एवं वनस्पतियों की सुरक्षा देती है एवं जैव संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

जैन धर्म में अहिंसा शब्द पर्यावरण संरक्षण से ही जुड़ा है। सभी जैन मुनि मुंह पर मास्क लगाते हैं ताकि छोटे से छोटे जीव भी उनके सांस लेने या बोलने से नष्ट न हो जाएं। जैन धर्म में अपरिग्रह भी इस बात का सन्देश देते हैं कि ज्यादा संग्रह की प्रवृत्ति से पर्यावरण को नुकसान होता है।

बौद्ध धर्म की मूल शिक्षा प्रकृति एवं मनुष्य के बीच आत्मिक संपर्क की है। इस धर्म में वृक्षों को काटना जघन्य अपराध है। भगवान बुद्ध को पीपल के पेड़ के नीचे ही बोधिसत्व प्राप्त हुआ था।

चीन एवं जापान में बौद्ध मठों में 'गिंक्लों बाइलोबा' नामक वृक्ष उगाया जाता है। धार्मिक आस्था के कारण यह वृक्ष जीवित जीवाश्म के रूप में पूजा जाता है।

हिन्दू, जैन एवं बौद्ध संन्यासी ध्यान लगाने के लिए प्राकृतिक एवं शांत वातावरण का उपयोग करते थे।

ये शांत वातावरण जंगल में ही मिलता था। वहां किसी उचित स्थान को मंदिर का रूप दिया जाता था। धार्मिक आस्था के कारण उस जगह जंगल की सुरक्षा होती थी एवं जंगली जानवरों का शिकार भी नहीं किया जाता था।

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में भी धार्मिक मान्यताओं की अहम भूमिका है। नदी, कुंआ, तालाबों एवं पवित्र पेड़ पौधों की पूजा इसी उद्देश्य से की जाती है कि इनका संरक्षण हो। मानसून में गंगा में मछुआरों द्वारा मछलियों का शिकार नहीं किया जाता है इससे गंगा की संकटापन्न मछली की प्रजाति 'हिलसा इलिसा' को पनपने का मौका मिलता है। जानवरों के शिकार के भी नियम हैं जैसे गर्भवती हिरणी का शिकार नहीं किया जाता, बंगाल में कच्चे बेर नहीं तोड़े जाते। ये सभी मान्यताएं जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करती है।

आज आवश्यकता है इन धार्मिक मान्यताओं एवं आस्थाओं को समाज में सही ढंग से प्रदर्शित करने की, ताकि हमारा समाज जैव विविधता की महत्ता को समझे एवं उसके संरक्षण में अपना योगदान दें। जिस तरह सितार की एक कड़ी टूट जाने पर उससे मधुर लहरी निकल पाना कठिन है, उसी प्रकार प्रकृति की जीवन शृंखला से जीवों एवं वनस्पतियों की किसी भी कड़ी का टूटना हानिकारक है जो समूचे पर्यावरण चक्र को प्रभावित करता है।

डॉ. शैलेन्द्र पाटनी
उप प्राचार्य

हिन्दी भाषा में वैज्ञानिकता

मनुष्य प्रारम्भ से ही अपने क्षेत्र या राष्ट्र विशेष के अनुरूप अपनी भाषा सीखने लग जाता है और जब तक सीखता है तब तक कि वह अच्छे से पढ़ना लिखाना व समझना नहीं जान जाता। आपने कभी यह सोचा है कि जब हिन्दी भाषा पढ़ते हैं तो उसके साथ सदैव एक 'वैज्ञानिक' शब्द अवश्य जुड़ा हुआ दिखाई देता है। अक्सर हमने देखा है कि जो भी हमारे हिन्दी शिक्षाक होते हैं वे यह बताते हैं कि हिन्दी भाषा को संस्कृत के समान ही 'वैज्ञानिक भाषा' माना गया है। भाषा के साथ वैज्ञानिक शब्द जुड़ता है तो मन में हमेशा एक प्रश्न उठता है कि वैज्ञानिकता तो विज्ञान में समझ आती है पर भला भाषा भी वैज्ञानिक है यह सुनने समझने में थोड़ा कठिन महसूस होता है। मन की आंतरिकता से उठे इस प्रश्न को शमित कैसे किया जाए ? यह प्रश्न वाकई उत्तर के दृष्टिकोण से जटिल लगता है। फिर भी यदि हम इस भाषा की गहराई में जायें तो ऐसा महसूस होता है कि जब विद्धान इसे वैज्ञानिकता पर खरा उतारते हैं तो इसे समझने का प्रयास हमें भी करना चाहिए।

बस इसी सोच व उत्तर को पुष्ट करने की दृष्टि से जब स्वयं पर इस भाषा का प्रयोग उच्चारण के माध्यम से करना चाहा तो वे समस्त बातें निकलकर आई जो विद्धान हमेशा से बताते आ रहे हैं। यदि हम हिन्दी भाषा के जितने भी मानक वर्ण है उन्हें उच्चारण करके देखें तो यह स्पष्ट होता है और यह सही भी है कि भाषा वैज्ञानिकों ने गंभीर शोध एवं प्रयोग के माध्यम से उनको स्वर, व्यंजन या अन्य वर्ण नाम दिया है।

इसी बात या वैज्ञानिक शब्द को पुष्ट करने के लिए हम उदाहरण स्वरूप समझने की कोशिश करते हैं कि वास्तव में हिन्दी भाषा के वर्णो में वैज्ञानिकता कहाँ है? हिन्दी वर्णो में 'स्वर' शब्द तो आपने सुना ही है परन्तु इसे समझे कैसे? आईए समझते हैं कि आखिर वैज्ञानिकता की दृष्टि से ये स्वर है क्या और किसे कहते हैं? इसकी परिभाषा इस प्रकार है अर्थात् स्वर का सामान्य अर्थ उन ध्वनियों या आवाज से लिया जाता है जो फेफड़ों से निकली वायु का मुख विवर से सीधा या निर्बाध रूप से बाहर निकलने पर उच्चारण होता हो। अब आप अ, आ, इ, ई या उ, ऊ कोई भी स्वर उच्चरित करेंगे तो महसूस करेंगे कि इनके उच्चारण में मुँह की आकृति बदलती है और उच्चारण के समय फेफड़ों से बाहर आने वाली वायु कहीं रुकती नहीं है। इसे गंभीरता से महसूस करते हुए उच्चारण करेंगे तो पायेंगे कि वाकई इनके उच्चारण में वायु मुख विवर के किसी भी स्थान पर रुकती नहीं है एवं सीधी बाहर आती है तब इनका उच्चारण स्पष्ट रूप में होता है। जबकि इसके ठीक विपरीत व्यंजन में देखा जाता है कि जब भी आप क, ख, च, प, त या र का उच्चारण करेंगे तो वायु मुख विवर में कहीं न कहीं बाधित न हो तो व्यंजनों का उच्चारण नहीं हो पाता। इससे यह तो ज्ञात हो जाता है कि उच्चारण के समय वायु का रुकना व नहीं रुकना शारीरिक संरचना की वैज्ञानिकता पर निर्भर करता है।

इसकी यात्रा यहीं तक नही है। यदि आप 52 वर्णो में से किसी भी वर्ण का उच्चारण करेंगे तो उसका निश्चय ही वैज्ञानिक स्वरूप निकलकर सामने आयेगा। जैसे आप त, थ, द या ध को लें और 'त' का उच्चारण करें। जब भी आप 'त' का उच्चारण करेंगे तो आप के मुख विवर में स्थित जिह्वा दौड़ती हुई दाँतों से टक्कर खाने का प्रयास करेगी। यदि वहाँ दाँत होंगे तो त, थ का उच्चारण हो जायेगा अन्यथा इस दंत्य ध्वनि में बाधा उत्पन्न हो जायेगी। इसी प्रकार चाहे आप 'प' वर्ग के प, फ, ब, भ का उच्चारण करके देख लीजिए, जैसे ही उच्चारण करेंगे तो आपके दोनों होंठ बंद होकर एकदम से खुलेंगे तब इनका उच्चारण होगा। किसी कारणवश आपके होंठ चोटिल हो जाये या कट जाए तो इस ध्वनि उच्चारण में काफी बाधा उत्पन्न होती है। हिन्दी में बिन्दी अर्थात् 'अनुस्वार' की तो बात ही निराली है। अगर सर्दी में जुकाम लग जाए और अनुस्वार का उच्चारण करना पड़े तो 'जंग' का उच्चारण 'जग' ही रह जायेगा और रंग का उच्चारण 'रग' हो जाएगा जिसके अर्थ में ही परिवर्तन परिलक्षित होगा।

अत: इस उच्चारण दृष्टि को गंभीरता से समझा जाये तो यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी भाषा विज्ञान प्रकृति द्धारा प्रदत शरीर के वैज्ञानिक स्वरूप से ही संभव है। उच्चारण से जुड़े इन्हीं कारणों से हिन्दी भाषा को वैज्ञानिक भाषा माना गया है। आप इसे केवल पढ़े व रटे ही नहीं बल्कि थोड़ा समझने की चेष्टा करें। जब भी आप ऐसा करेंगे तो आप भाषा के साथ जीते हुए आनंदित होंगे एवं विचार करेंगे कि क्यों न हमारी हिन्दी भाषा राजभाषा से राष्ट्रभाषा बन जानी चाहिए।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
हिन्दी विभाग

President's Corner

SMART Goals...

There was a man taking a morning walk at or the beach. He saw that along with the morning tide came hundreds of starfish and when the tide receded, they were left behind and with the morning sun rays and they would die. The tide was fresh and the starfish were alive. The man took a few steps, picked one and threw it into the water. He did that repeatedly. Right behind him there was another person who couldn't understand what this man was doing. He caught up with him and asked, "What are you doing? There are hundreds of starfish. How many can you help? What difference does it make?" This man did not reply, took two more steps, picked up another one, threw it into the water, and said, "It makes a difference to this one."

What difference are we making? Big or small, it does not matter. If everyone made a small difference, we'd end up with a big difference, wouldn't we?

Our teachers at Shri Ratanlal Kanwarlal Patni Girls' College, creates difference in each and every student. May be a small difference they feel, but for us, it is a huge difference. Making us better than what we were before. Over here we learnt that our goals must be SMART...

1. S–Specific
2. M–must be Measurable
3. A–must be Achievable
4. R–Realistic
5. T–Time-bound.

Anjali Jain
President, Student Union
BCA Part - II

चिन्तन

जो सुनाने आयी हूँ उसे गौर से सुनना,
मेरी बात पर आत्म चिन्तन करना,
कहूँगी वही जो बात हैं सही,
आज इस देश की हर दिशा है,
सिर्फ खाई, खाई और खाई ॥
चारों दिशाओं में है ये खाई,
कहीं पे किसी ने किसी की रोटी खाई,
तो कहीं पे किसी ने किसी की कमाई खाई,
ओर तो ओर अब आ गई ये महँगाई ॥
कौन कहता है आ गई महँगाई,
सिर्फ गरीबों की है ये कमाई,
राजनेताओं ने भी इसे खाई,
वोट मांगने के फिर ये काम आई ॥
कहते हैं कि खात्म कर देगें ये महंगाई,
कैसे खत्म करेंगे ये महंगाई,
सरकार बनते ही मंगाई गाड़ी और चल हट मेरे भाई ॥
कहते है सरकार के पास पैसे नहीं है,
नहीं है आमदनी
अरे ये बात तो उन गरीबों के लिए है
जिन्होंने इनसे आस लगाई ॥
अरे तो पैसा कहा गया,
बता मेरे भाई
बुरा मत मानना
लेकिन राजनेताओं की है ये चतुराई
सारा पैसा इन्होंने छुपाया
बाकी बचा आतंकवादियों पर लुटाया ॥

दिव्या बागड़ा
द्वितीय वर्ष, वाणिज्य वर्ग

सीख

लगा सको तो बाग लगाओ,
आग लगाना मत सीखो।
दिखा सको तो राह दिखाओ,
राह भूलाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ,
हृदय जलाना मत सीखो।
गाना हो तो हरिगुन गाओ,
बुरा बोलना मत सीखो।
बढ़ा सको तो ज्ञान बढ़ाओ,
क्रोध बढ़ाना मत सीखो।
पिला सको तो जल पिलाओ,
जहर पिलाना मत सीखो।
कमा सको तो पुण्य कमाओ,
पाप कमाना मत सीखो।
चुका सको तो कर्ज़ चुकाओ,
फर्ज भूलाना मत सीखो।
पा सको तो गुणों को पाओ,
अवगुण पाना मत सीखो।
भुला सको तो गम भुलाओ,
याद भुलाना मत सीखो।
कर सको तो सत्कर्म करो,
अपकर्म करना मत सीखो।
बढ़ा सको तो ज्ञान बढ़ाओ,
अज्ञान बढ़ाना मत सीखो ॥

बलवीर सिंह राठौड
प्रशासनिक कार्यालय

अपना शहर अपनी पहचान

नवग्रह मंदिर : हमारे शहर किशनगढ़ में विश्व का एकमात्र विश्वविख्यात नवग्रह मंदिर स्थित है। विद्वानों का ऐसा मानना है कि यह मंदिर लगभग 500 वर्षो से भी अधिक प्राचीन है। बृहस्पति, शुक्र, मंगल, बुध, शनि, राहु और केतु स्थापित है। सूर्य इन सबके ऊपर है। ,शनि,राहु और केतु की मूर्तियाँ काले पत्थर की है बाकी मूर्तियाँ सफेद संगमरमर की है। ऐसा कहा जाता है कि इन सभी ग्रहों को एक स्थान पर स्थापित करने से ज्ञान एवं शिक्षा में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मिलती है।

आफरीन खान
प्रथम वर्ष, कला वर्ग

परीक्षा

इतिहास की परीक्षा थी उस दिन, चिंता से हृदय धड़कता था,
बुरे शकुन घर से चली थी, बाँया हाथ फड़कता था।

मैंने सवाल जो याद किए, वे आधे याद हुए,
उनमें से भी स्कूल तक, आते-आते कुछ बर्बाद हुए।

आप कहते हो ईश्वर सदा, संकट में भक्तों की सहाय,
जब ग्राह ने गज को पकड़ लिया, तुमने ही उसे बचाया था।

तब द्रौपदी समझ कर मुझको भी, मेरा भी चीर बढ़ाओ तुम,
मैं विष खाकर मर जाऊँगी, वरना जल्दी से आ जाओ तुम।

आकाश चीर कर अम्बर से, आई गहरी आवाज एक,
अरे मूर्खा! व्यर्थ क्यों रोती है, तू आँख खोलकर इधर देख।

गीता कहती है कर्म करो, फल की चिंता मत किया करो,
मन में आए जो बात उसी को, पर्चा पर लिख दिया करो।

मेरे दिमाग के पाट खुले, पर्चे पर कलम चली चंचल,
जैसे किसी खेत की छाती पर, चलता हो हल वाले का हल।

मैंने लिखा पानीपत का, दूसरा युद्ध था सावन में,
जापान जर्मनी के बीच हुआ, अट्ठारह सौ सतावन में।

लिख दिया महात्मा बुद्ध, महात्मा गाँधी जी के चेले थे,
गाँधी जी के संग बचपन में वे आँख - मिचौली खेले थे।

खुशबू सोनी
द्वितीय वर्ष, कला वर्ग

Bibliophiles!

some interesting book reviews to make up your mind.

READING THE MAHATMA

Title: **The Story of My Experiments with Truth**
Writer: **Mohandas K. Gandhi**
First Published: Weekly Series in Gujarati magazine *Navjivan* during 1925–28
Publisher: **GBD Books (English Translation)**
Pages: **448**

Gandhi lives in the fascination of many people. He cannot be segregated from our past. People have various opinions about him. Deconstructing Gandhi, the person and the leader cannot be an easy task, but in my opinion reading his autobiography is the best place to begin. "The Story of My Experiments with Truth" is a classic autobiography giving personal account of the man, better known as the *Mahatma*. His boyhood days, legal studies in England, time spent in South Africa and his internal struggle on *ahimsa* and *satya* are carefully recounted in this inspiring and critical work of insurmountable importance.

Gandhi's experience in life had convinced him that there was no other God than truth. Strongly convinced with his beliefs he writes in the forward "*If every page of this book does not proclaim to the readers that the only means for the realization of truth is Ahimsa, I shall deem all my labor in writing these chapters to have been in vain.*"

The original manuscript was written in Gujarati, which ran through 5 editions, sold about 50,000 copies. The reviewed book is an English version, translated by Mahadev Desai. In 1999, the book was designated as one of the "100 Best Spiritual Books of the 20th Century".

Undoubtedly this a must read, if history and life intrigues you.

Nishi Kasliwal
(B.A. II Year)

एक अनसुनी फरियाद

नारी का जीवन भी,
क्या जीवन बनाया है
जिसे गुजरे वक्त ने मंदिर की देवी,
ममता की मूरत ठहराया
उसी नारी को आज, इस जहां में
कोठे की शान बनाया है
कहीं उसकी अस्मत लुटी,
तो कहीं जिन्दा जलाया है।
कल जिसे पूजा था इस जहाँ ने
उसे ही आज वहशियत का खिलौना बनाया है,
और आगे अब क्या लिखूँ,
नारी की इस दशा को देख
आँखों का सागर उमड़ आया है
कलम उठती नहीं आगे, हाथ रुक से गए हैं
क्योंकि आँसूओं में मिलकर, इस स्याही
ने भी अपना रंग गवाया है।
ऐ खुदा! जरा उतर इस धरती पर, और देख
जिसने रचा इस जहाँ को और प्यार सिखाया है,
डसी नारी को तेरे इस जहाँ ने
एक अनसुनी फरियाद बनाया है।

गीता पालीवाल,
वनस्पति विज्ञान विभाग

निराशा को पास मत रखना

किसी सपने को खास मत रखना,
कल्पना में निवास मत करना,
जहाँ पर हो एक भी चिनगारी,
भूल कर भी कपास मत रखना।
जो बने आपकी सफलता में बाधक,
ऐसे लोगों को पास मत रखना,
लेकिन मेहनत के बिना यारों,
सफलता की आस मत रखना।
देखकर चन्द गिरते लोगों को,
अपने मन को उदास मत रखना,
तुमको रखना है अगर सिर उँचा,
खुद को व्यसनों का दास मत रखना।
अगर लगे सब झूठे हैं साथी,
तो उनकी बातों पर विश्वास मत करना,
लानी है यदि जीवन में सफलता,
निराशा को पास मत रखना।

सिमरन अग्रवाल
प्रथम वर्ष, वाणिज्य वर्ग

आधुनिक युग में "उद्यमिता" का महत्त्व

भारत की जनसंख्या दिन- प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, फलस्वरूप खाद्यान की समस्या और बढ़ती महंगाई के कारण बड़े परिवारों का सुचारू रूप से पालन पोषण करना भी आदमी के बस की बात नहीं रह गई है। आधुनिक समय में सभी युवाओं को रोजगार मिल पाना बहुत मुश्किल है। जिसके फलस्वरूप उन्हें अर्द्ध बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। बेरोजगारी की समस्या के निदान हेतु ज्यों-ज्यों दवा दी गई मर्ज बढ़ता गया। बेरोजगारी आज इस हद तक बढ़ गई कि युवा वर्ग ऐसी नौकरी करने को मजबूर होते हैं जिसमें उनका शोषण एवं उनके साथ अन्याय होता है। फलत: उनमें कुंठाएं घर कर जाती है। युवाओं की इस विवशता का लाभ असामाजिक तत्त्व उठाते हैं एवं अपराध वृत्तियुक्त माफिया समूह ऐसे युवाओं को अपने चक्र में फंसा कर उन्हें भी अपराधी बना देते है। ऐसा युवा वर्ग किसी न किसी रूप में हिंसा का शिकार होकर इस दुनिया को अलविदा कह जाते हैं।

भारतीय युवाओं की नौकरी करने की जड़ मानसिकता ने रोजगार की समस्या को और विकराल बना दिया है। इससे सभी को नौकरी मिलना असम्भव है। इन विषम परिस्थितियों में एक ही रास्ता है जो कि सारी समस्याओं का निदान कर सकता है, वह है, "उद्यमिता"। अत: आज के युग में उद्यमिता उन बेरोजगार युवाओं के लिए संजीवनी बूटी का काम करती है, जो उन्हें नया जीवन दान देती है। उद्यमिता किसी भी नये उपक्रम को प्रारम्भ करने की भावना को कहते हैं या कुछ भी नया करना यह उद्यमिता कहलाती है।

उद्यमिता विकास के लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम हम अपने अंदर उद्यमी व्यक्ति के गुणों को बढ़ाये। उद्यमी एक क्रियाशील प्राणी है जो विशेष कार्य खासतौर उद्यम संबंधित कार्य को क्रियान्वित करने की पहल करता है। उद्यमी बनना एक व्यक्तिगत कौशल होता है, जिसका संबंध न जाति, न धर्म, न समुदाय न ही किसी विषय में डिग्री प्राप्त करने से होता है। उद्यमी बनने में स्वयं व्यक्ति की अहम भूमिका होती है। उँची उपलब्धि की चाह रखने वाला व्यक्ति उद्यमी बनने का रास्ता स्वत: खोज लेता है। वास्तव में प्रत्येक युवा को उद्यमी बनने के लिए प्रेरणा की जरूरत होती है, उसे यह प्रेरणा बचपन से दी जाती है या विशेष प्रशिक्षण द्धारा दी जा सकती है।

आज के इस प्रतियोगी समाज में युवाओं का मनोबल ना टूटे व अपनी जिंदगी से निराश होकर कोई गलत कदम ना उठायें ऐसे समय में युवाओं की तकदीर बदलने के लिए उनमें उद्यमिता की भावना का विकास करना बहुत जरूरी है। इसके लिए नियोजित ढंग से ठोस कदम उठाने होंगे। उद्यमिता की भावना पनपाने के लिए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में युवाओं को संगठित करके उनके बीच जाकर उद्यमिता के सम्बन्ध में चर्चा करनी होगी। इसके महत्त्व एवं आवश्यकता से उन्हें परिचित कराना होगा। इसके लिए अभिभावकों को यह समझना होगा कि आज के बदले परिवेश में अपनी सन्तान के लिए नौकरी नहीं वरन् सफल उद्यमी बनने के सपने संजोए। उद्यमिता विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने युवाओं तक उद्यमियों से सम्बन्धित नये ज्ञान, नई सुचनाएँ एवं आवश्यक जानकारी पहुंचाएं ताकि वे आय परक बातों को सोच सकें, उद्यमिता विकास के लिए सरकार के द्धारा भी कई सरकारी नीतियों एवं आयोजनों का क्रियान्वयन किया जा रहा है। अनेक उद्यमिता विकास केन्द्रों की स्थापना की गई है, जैसे उद्यमिता विकास एवं प्रबन्ध संस्थान जयपुर, राजस्थान उद्यमिता विकास केन्द्र गुजरात इत्यादि राज्य स्तरीय अनेक संस्थाएँ है जो उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का संचालन करती हैं।

इस संदर्भ में मेरा यह कहना है कि उद्यमिता मिट्टी से सोना बनाने की कला है। उद्यमिता के क्षेत्र में अनेक नामचीन हस्तियाँ है जिनमें एकता कपूर, किरण मजूमदार, लैला लाल, किद्वई, रितु नन्दा एवं शहनाज़ खान आदि प्रमुख है जिन्होंने विकास की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ. वर्षा जैन
वाणिज्य संकाय

असफलता: एक चुनौतीपूर्ण विकास है

अंग्रेजी में कहावत है "Practice makes you perfect" अभ्यास आपको दक्ष बनाता है। Try and try until you succeed आप निरंतर कोशिश करो अवश्य सफल होंगे। किसी भी चीज में योग्यता हासिल करने के लिए निरंतर अभ्यास की जरूरत होती है। एक पुरानी कहावत है– लुढ़कते – लुढ़कते गोल हो जाना। जन्म से हम सब समान होते हैं लेकिन भविष्य में कोई डॉक्टर बनता है, कोई वकील, कोई इंजिनियर, कोई वैज्ञानिक, कोई व्यापारी तो कोई नौकरशाह। जिसकी जैसी बचपन से सोच व रूचि थी उसने वैसा ही अभ्यास किया और वह बन गया। अगर जीवन में कोई योग्यता हासिल करनी है तो यह माइने नहीं रखता कि आप कौन है, कहाँ है या आपके पास क्या साधन हैं? माइने रखती है तो बस दृढ़ इच्छाशक्ति। जिसमें दृढ़ इच्छाशक्ति होगी वही अथक प्रयास करेगा। परिणाम परिश्रम का फल है। परिणाम यह सिद्ध करता है कि अगले ने कितना परिश्रम किया होगा। अगर कोई सफल वैज्ञानिक है इसका मतलब यह नहीं है कि उसने एक ही बार में कोई आविष्कार या सफल प्रयोग किया है। उसके एक सफल आविष्कार या प्रयोग के पीछे अनगिनत असफल प्रयास छिपे होते हैं। 'हर जीत के पीछे सैकड़ों हार छुपी होती है।' जीतते वही है जो हर असफलता के बाद फिर से होने के प्रयास में जुट जाते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि कौशल सफल विकास या योग्यता विकसित करना निरंतर परिश्रम का फल है। अंग्रेजी में कहावत है " When the going gets tough, the tough gets going" चर्चा उसी कौशल या योग्यता की होती है जो भीड़ से श्रेष्ठ हो।

हर्षा कोडवानी
प्रथम वर्ष,
वाणिज्य ऑनर्स वर्ग

वर्तमान सरकार की नीतियों पर विचार

'यथा दृष्टि तथा सृष्टि' जिसकी जैसी नज़र उसका वैसा ही नजरिया। सरकार की नीतियों पर सबसे अधिक चर्चा 8 नवम्बर, 2016 की रात 8 बजे की गई। नोटबंदी एक ऐसा मसला था जो पूरे देश के लिए एक चुनौती थी। देश में इस विषय पर अधिकांश लोग तारीफ के पुल बांध रहे थे तो कुछ लोग इसे राजनीतिक षड़यंत्र मानते हुए विरोध के स्वर प्रखर कर रहे थे। उन्होंने तर्क दिये कि नोटबंदी से लाखों उद्योग बंद होने से करोड़ों श्रमिक बेरोजगार हो गए। टेलीवीजन व समाचार पत्रों में आती खबरें बताती है कि न आतंकवाद रुका, न नक्सलवाद, न काला धन बाहर आया, न भ्रष्टाचार रुका और न ही अर्थव्यवस्था में सुधार कोई हुआ? सरकार की दूसरी चर्चित नीति है–''कैशलेस इकोनोमी'' कई लोग ऐसा सोचते हैं कि कैशलेस इकोनोमी से पारदर्शिता बढ़ेगी। नोटों को गिनने एवं लाने ले जाने का श्रम बचेगा। नकली नोटों की समस्या समाप्त होगी व अधिकतम कर वसूला जा सकेगा। इसके विपरीत कई लोग इस सोच को हास्यास्पद करार देते हैं। वे सोचते हैं कि बिजली, पानी, सड़क जैसी आधारभूत सुविधाएँ भी सही नहीं है तो भला कैशलेस इकोनोमी बिना संसाधनों के कैसे सम्भव होगी। जिस देश में सरकारी कर्मचारी तक ढंग से पढ़ा लिखा न हो तो वहाँ कैशलेस इकोनोमी से तात्पर्य केवल ख्याली पुलाव से ज्यादा कुछ नहीं है।

हमारा देश विविधता में एकता वाला देश है जहाँ विविध विचारों की परम्परा रही है अत: पता नहीं चलता कि कौनसा निर्णय सही है और कौनसा गलत। बहस हमेशा से चलती आई है चल रही है और हमेशा चलती रहेगी ....।।

अक्षता मेड़तवाल
प्रथम वर्ष,
वाणिज्य ऑनर्स वर्ग

खोये स्मार्टफोन का पता लगाऐं

यदि आप अपने खोये हुए स्मार्टफोन को ढूंढने में असमर्थ हैं और आपने स्मार्टफोन में कोई भी ऐप डाउनलोड नहीं किया है तो अब आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि अब आप गूगल के एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर का उपयोग करके अपने खोये हुए एंड्रॉइड स्मार्टफोन को प्राप्त कर सकते हैं। अगर आपका फोन चोरी हो गया है या आप उसे कही रखकर भूल गए है तो आप इस तरीके से अपने फोन का पता लगा सकते हैं।

सभी एंड्रॉइड स्मार्टफोन में गूगल प्ले इंस्टाल होता है। जब आप अपने एंड्रॉइड स्मार्टफोन या टेबलेट पर पहली बार गूगल प्ले का उपयोग करते हैं, तो गूगल आपके डिवाइस में एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर इंस्टाल कर देता है। बस आपको इसे एक्टिवेट करना होगा।

एंड्रॉइड डिवाइस को एक्टिवेट करने के लिए सबसे पहले अपने डिवाइस की सेटिंग्स में जाए, फिर सिक्यूरिटी ऑप्शन में जाकर डिवाइस एडमिनिस्ट्रेटर पर जायें, वहाँ आपको कुछ एप्स दिखेंगे, उनमें से एक एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर होगा, आप उसे एक्टिवेट करें। अपने स्मार्टफोन पर एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर सक्रिय करने के बाद, आपको अपने वेब ब्राउज़र पर जाकर अपने खोए हुए एंड्रॉइड डिवाइस को खोजने के लिए निम्न चरणों का पालन करें। सबसे पहले गूगल प्ले होम ओपन करें (https://play.google.com/store), इस पेज पर ऊपर दाँए कोने पर एक गियर का चिन्ह् होगा उस पर क्लिक करने पर आपको एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर दिखेगा, उस पर क्लिक करें। एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर स्वचालित रूप से संपर्क करेगा। आपके देश के नक्शा आपके वेब ब्राउज़र पर प्रदर्शित किया जाएगा और आपको डिवाइस की लोकेशन दिखाई देगी। इसी पेज पर आपको तीन विकल्प और दिखाई देंगे 1. रिंग द डिवाइस, 2. लॉक द डिवाइस तथा 3. इरेस ऑल डाटा।

रिंग द डिवाइस विकल्प में आपके डिवाइस पर उच्चतम ध्वनि पर रिंग जायेगी, भले ही डिवाइस साइलेंट मोड पर हो। परन्तु यह विकल्प डिवाइस के बंद होने पर कारगर नहीं रहेगा।

लॉक द डिवाइस मोड सुविधा आपके एंड्रॉइड स्मार्टफोन को लॉक करेगी और इसे एक्सेस करने के लिए एक नया पासवर्ड प्रदान किया जाएगा। आप अपने खोये हुए स्मार्टफोन पर अपना वांछित पासवर्ड सेट कर सकते हैं।

इरेज़ ऑल डाटा सुविधा का उपयोग करने पर एंड्रॉइड स्मार्टफोन में मौजूद सभी डेटा हटा दिए जाएंगे, हालांकि यह आपके मेमोरी कार्ड की सामग्री को नहीं हटायेगा और एक बार जब सभी डेटा मिटा देंगे तो यह आपके स्मार्टफोन को फैक्ट्री-रीसेट करेगा।

इससे पहले कि आप अपने डिवाइस को ढूंढ़ने के लिए एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर का उपयोग कर सकें, आपको अपने डिवाइस की लोकेशन एक्सेस को चालू करना होगा। एंड्रॉइड डिवाइस मैनेजर उन उपकरणों के लिए काम नहीं करेगा जो बंद है या जिनके पास मोबाइल डेटा या वाई-फाई कनेक्शन नहीं है। इस सुविधा के अलावा भी कई ऐसे एप्स हैं जिनका उपयोग आप अपने खोये मोबाइल को खोजने के लिए कर सकते हैं। साथ ही अपने फोन पर सेव की गई समस्त जानकारी को क्लाउड पर सेव करें तथा मेमोरी कार्ड को एन्क्रिप्ट करे ताकि कोई आपकी जानकारी का दुरुपयोग न कर सके।

रवि सोनी,
कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

सजगता से ही क्षय रोग का उन्मूलन सम्भव

तपेदिक, क्षय रोग या टी.बी. एक घातक संक्रामक बीमारी है जो मनुष्यों में प्राचीन काल से उपस्थित है। विश्वभर में सर्वाधिक मौतों के दस कारकों में से टी.बी. एक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2015 में 10.4 मिलियन लोग इससे ग्रसित हुए एवं 1.8 मिलियन लोगों की मौत हुई जिसमें 0.4 मिलियन लोग एच. आई. वी. से पीड़ित थे। भारत उन 6 देशों की तालिका में पहले पायदान पर है जिनमें कुल 60 प्रतिशत टी.बी. ग्रसित लोग हैं। भारत सरकार आर. एन. टी. सी. पी. के तत्त्वावधान में ''टी.बी. मुक्त भारत'' कार्यक्रम 2012–17 तक चला रही है।

क्षय रोग सामान्यत: एक जीवाणु 'माइकोबैक्टिरियम ट्यूबरक्यूलोसिस' से होता है। यह जीवाणु ग्राम सकारात्मक दण्डाणु होता है। यह रोग दो प्रकार का होता है – लेटेन्ट टी.बी. तथा सक्रिय टी. बी.। हवा के माध्यम से फैलने वाली इस बीमारी का सर्वाधिक प्रभाव फेफड़ों पर होता है।

क्षय रोग सामान्यत: एक ही परिवार के सदस्यों, घनिष्ट मित्रों तथा उन लोगों में सामान्यतया फैलता है जो साथ कार्य करते है। इस रोग से ग्रसित व्यक्ति के खाँसने, छींकने, थूँकने या दूसरों से वार्तालाप करने से ये संक्रामक बूंदों को बाहर निकालते हैं। इनमें से प्रत्येक बूंद रोग के संचरण के लिए पर्याप्त है। एच. आई. वी., कैंसर, डायबिटिज़ (मधुमेह) से ग्रसित व्यक्तियों, कम प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों एवं बच्चों में इस रोग का फैलना आम है।

इस रोग के सामान्य लक्षण बुखार आना, ठंड लगना, रात में पसीना आना, भूख न लगना, वजन घटना, थकान आदि है। अत्यधिक संक्रमण की अवस्था में सीने में दर्द, लम्बी अवधि तक खांसी व बलगम होना, बलगम के साथ खून आना जैसे लक्षण भी होते हैं। इस कारण फेफेड़ों में घाव उत्पन्न हो जाते हैं।

इसके निदान के लिए अधिकांश देश आज भी 'स्पुटम स्मियर माइक्रोस्कोपी' विधि या बलगम जांच का उपयोग कर रहे हैं। 2010 से लगभग 100 देशों में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुशंसित तीव्र परीक्षण ''एक्सपर्ट एम. टी. बी./आर. आइ. एफ.'' का उपयोग किया जा रहा है, जो मात्र दो घंटों में परीक्षण दे देता है। 2016 से एक नये परीक्षण ''रेपिड मोलिक्यूलर टेस्ट'' की अनुशंसा भी विश्व स्वास्थ्य संगठन ने की है।

आज टी.बी. का उपचार संभव है। 1994 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने टी.बी. की रोकथाम के लिए ''डॉट्स'' कार्यक्रम चलाया, जिसके अंतर्गत रोगी डॉट्स कार्यकर्ता की निगरानी में समय पर अपनी दवाईयाँ लेता है। यह कार्यकर्ता कोई भी हो सकता है, घर का सदस्य भी। इस रोग के प्रथम श्रेणी उपचार के लिए आयसोनिएजिड, रिफाम्पिसिन, पायराजिनामाइड तथा इथाम्ब्यूटोल, स्ट्रेप्टोमाइसिन नामक दवाईयाँ कारगर है। बच्चों में बीसीजी का टिका बचपन में लगाया जाता है जो फेफड़ों की टी.बी. से रक्षा करता है।

आओ सबको इस रोग के प्रति जागरुक करें और विश्व स्वास्थ्य संगठन के ''यूनाईट टू एन्ड टी.बी. : लीव नो वन विहाइंड'' को साकार करें।

REACH THE
3 MILLION.
FIND. TREAT. CURE TB.

विश्वजीत जारोली
प्राणिविज्ञान विभाग

हल्दीघाटी का विजेता : महाराणा प्रताप

स्वतंत्रता के बाद ही राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास में हल्दीघाटी के युद्ध का विजेता अकबर को बताया जाता था किन्तु आगामी वर्षो में विद्यार्थियों को पढ़ाया जायेगा कि हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप विजयी रहे थे। यह मुद्दा इतिहासकार डॉ.चन्द्रशेखर शर्मा द्धारा लिखित पुस्तक ''राष्ट्र रतन महाराणा प्रताप'' के शोध के आधार पर उठाया गया है। 2007 में प्रकाशित पुस्तक में इतिहासकार शर्मा ने अपने शोध एवं साक्ष्यों के आधार पर महाराणा प्रताप को विजेता बताया है।

डॉ. शर्मा ने इन कारणों के आधार पर महाराणा प्रताप को विजेता मानते हैं –

उद्देश्य पूर्णता : डॉ. शर्मा के अनुसार महाराणा प्रताप ने अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए अकबर को पराजित किया क्योंकि हल्दीघाटी युद्ध के बाद अकबर ने सेनापति मानसिंह और आसिफ खां को छ: माह के लिए दरबार में नहीं आने की सजा दी। (संभवत: विजेता को पुरस्कृत किया जाता है)।

हल्दीघाटी के नजदीक जमीनों के पट्टे जारी करना : डॉ.शर्मा के शोध के अनुसार युद्ध के बाद हल्दीघाटी के नजदीकी गाँवों में जमीनी के पट्टे जारी किये, जिन पर एकलिंग नाथ के दीवान महाराणा प्रताप के हस्ताक्षर हैं। उस समय जमीन के पट्टे जारी करने का अधिकार केवल राजा के पास ही होता था। यदि प्रताप को जीत नहीं मिलती तो उन ताम्र पत्रों पर प्रताप के हस्ताक्षर नहीं होते।

प्रताप ने गुरिल्ला युद्ध लड़ा था : महाराणा प्रताप ने गुरिल्ला युद्ध लड़ा था जिसके कारण मुगल सेना घुटने टेकने को मजबूर हुई। प्रताप ने मेवाड़ को बचाने के लिए 12 वर्षो तक मुगलों से संघर्ष किया। शर्मा के अनुसार पुरातात्विक साक्ष्य, भारतीय और फारसी साहित्य कृतियों के आधार पर युद्ध सूर्योदय से सूर्यास्त तक लड़ा गया जिसमें मुगल सेना भागने को मजबूर हो गई।

राजस्थानी लोक कथाओं से गौरवान्वित

डॉ. शर्मा लोक कथाओं के आधार पर कहते हैं कि ऐतिहासिक युद्ध में अकबर केवल प्रताप के बेशकीमती हाथी 'रामप्रसाद' पर ही अपना अधिकार कर पाया था। अकबर केवल उस हाथी के आधार पर गांव–गांव में जाकर प्रताप को पराजित करने का ढिंढोरा पीट रहा था किन्तु लोगों ने अकबर की विजय को झूठी विजय गाथा बतायी।

बदल पाएंगे इतिहास – डॉ. शर्मा ने बदलाव के बारे में कहा कि यह एक राजनीतिक मुद्दा है किन्तु युद्ध के परिणामों के बारे में वो किसी भी विद्धान से बहस को तैयार हैं। वैश्विक पटल पर महाराणा प्रताप को सम्मानित योद्धा का स्थान मिलना ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुरूप न्यायोचित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :- "राष्ट्र रतन महाराणा प्रताप"
डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा
इतिहासविद्

सुरेश कुमार शर्मा
इतिहास विभाग

आधुनिक जीवन में खेल का महत्त्व

''जीत की खातिर बस जुनून चाहिए, जिसमें उबाल हो
ऐसा खून चाहिए ये आसमां भी आयेगा जमीं पर, बस
इरादों में जीत की गूँज चाहिए।''

स्वस्थ रहना मनुष्य के जीवनभर हेतु अतिआवश्यक है। लक्ष्य पर पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित करने के लिए मानसिक और बौद्धिक स्वास्थ्य भी बहुत आवश्यक है। खेल खेलना उच्च स्तर का आत्मविश्वास लाता है और हमें अनुशासन सिखाता है, जो हमारे साथ पूरे जीवनभर रहता है। बच्चों को खेलों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और घर तथा स्कूली स्तर पर शिक्षकों और अभिभावकों की समान भागीदारी के द्वारा उनकी खेलों में रूचि का निर्माण करना चाहिए। स्पोर्ट्स और खेल बहुत ही रूचिकर हो गए हैं और किसी के भी द्वारा किसी भी समय खेले जा सकते हैं हालांकि पढ़ाई और अन्य किसी में भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इनका बचपन से ही अभ्यास होना चाहिए।

भारत सरकार खेल में प्रसिद्धी पाने वाले खिलाड़ी को ''अर्जुन पुरस्कार'' और उनके गुरू को ''द्रोणाचार्य पुरस्कार'' से सम्मानित किया जाता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम और शिक्षा आवश्यक है। शिक्षण संस्थान खेलों में नाम कमाकर ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं की पहचान बनाते हैं। पी.टी. ऊषा ने आठवीं कक्षा में दौड़ना प्रारम्भ किया एवं अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में देश का व स्वयं का नाम रोशन किया।

खेल और स्पोर्ट्स बहुत प्रकार के होते हैं और उनके नाम, खेलने के तरीके और नियमों के अनुसार होते है। कुछ प्रसिद्ध खेल क्रिकेट, हॉकी (राष्ट्रीय खेल), फुटबॉल, बॉस्केट बॉल, वॉलीबॉल, टेनिस, दौड़, रस्सी कूद, ऊँची और लम्बी कूद, डिस्कस थ्रो, बैडमिंटन, तैराकी, खो-खो, कबड्डी आदि बहुत से है। खेल शरीर और मन, सुख और दुख के बीच सन्तुलन बनाने के द्वारा लाभ- हानि को ज्ञात करने का सबसे अच्छा तरीका है। कुछ घंटे नियमित रूप से खेल खेलना, स्कूलों में बच्चों के कल्याण और देश के बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक बना दिया गया है। मनुष्य को जो पाठ शिक्षा नहीं सिखा पाती वह खेल और खेल का मैदान सिखा देता है। जैसे- खेल खेलते समय अनुशासन में रहना, लीडर की आज्ञा का पालन करना, खेल में जीत के समय उत्साह, हारने पर सहिष्णुता तथा विरोधी के प्रति प्रतिरोधी का भाव न रखना, अपनी असफलता का पता लगने पर जीतने के लिए पुन: प्रयत्न करना आदि सिखाता है।

खेलकूद का व्यक्तित्त्व के विकास में बहुत योगदान है। इनसे शारीरिक और मानसिक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। खुले मैदानों में होने वाले खेल खेलकर व्यक्ति स्वस्थ बना रहता है। खुली हवा में एवं खुले मैदानों में होने वाले खेल खेलकर व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। खुली ताजी हवा फेफड़ों में अधिक प्रवेश करती है एवं व्यक्ति निरोगी रहता है।

शारदा गुर्जर
खेल विभाग

खेल कूद और हमारा महाविद्यालय

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन की आधाशिला है। इस काल में आत्मसात् की गई समस्त अच्छी-बुरी आदतों का मावन जीवन पर स्थाई प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के साथ-साथ व्यायाम मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक है। विद्यार्थी जो अपनी पढ़ाई के साथ खेलो को बराबर का महत्त्व देते हैं वे प्राय: कुशाग्र बुद्धि के होते हैं। वे तन और मन दोनों से ही पूर्ण रूप से स्वस्थ होते हैं । खेलों से उनका मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है । वे अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक चुस्त-दुरुस्त होते हैं।

खेल के इसी महत्त्व को समझते हुए ''श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज'' ने खेल कूद को बढ़ावा देने हेतु प्रयत्नशील है। सामान्यत: विद्यालय स्तर पर खेल का अच्छा प्रदर्शन कर चुके विद्यार्थियों की खेल प्रतिभाएँ महाविद्यालय स्तर पर खेल सुविधाएँ एवं प्रोत्साहन नहीं मिलने के कारण दम तोड़ देती है। किशनगढ़ स्तर पर मात्र हमारा महाविद्यालय ही ऐसा महाविद्यालय है जहाँ खेल के क्षेत्र में कन्याओं के योगदान को बढ़ावा देने के लिए सभी सम्भव प्रयास किये जा रहें है।

महाविद्यालय में कई प्रकार के खेल जैसे - खो-खो, हॉकी, बॉस्केट बॉल, हैण्डबॉल, बैडमिंटन आदि में खिलाडियों की रुचि बढ़ाने हेतु एक सराहनीय शुरुआत की।

पहले ही वर्ष में हमारे महाविद्यालय ने 29वें अन्तर महाविद्यालय टूनमिन्ट में भाग लिया (बॉस्केट बॉल, हैण्डबॉल) तथा बेहतरीन प्रदर्शन कर सभी का दिल जीता । दूसरे वर्ष भी हमारे महाविद्यालय में 30वें अन्तर महाविद्यालय टूनमिन्ट में हॉकी, हैण्डबॉल, बॉस्केटबॉल में शानदार प्रदर्शन किया।

वर्तमान में हमारे महाविद्यालय में खेल कूद के साथ -साथ वर्कआउट भी करवाया जाता है जिससे विद्यार्थियों को सुबह जल्द उठने की प्रेरणा मिलती है।

खेलकूद के जरिए खिलाड़ियों में सामूहिक खेलकूद की भावना का विकास होता है।

अर्पिता जैन
द्वितीय वर्ष, बी.बी.ए.

जिज्ञासा : ज्ञान एवं स्रोत केन्द्र

''सरो विविध ज्ञान विद्धयते यस्या चितौ सा सरस्वती''

जिसको विविध विज्ञान अर्थात् शब्द सम्बन्ध प्रयोग का ज्ञान यथावत होता है, उसे सरस्वती कहते हैं। विद्यावाणी का नाम ही सरस्वती है तथा पुस्तकालय सरस्वती देवी की आराधना का मन्दिर है। पुस्तकालय वह स्थान होता है, जहाँ विविध प्रकार के ज्ञान, स्त्रोत, सूचनाओं एवं सेवाओं का संग्रह किया जाता है।

बाल गंगाधर तिलक कहा करते थे ''मै नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा, जहाँ पुस्तकें होंगी, वहीं स्वर्ग बन जायेगा।''

''जिज्ञासा''- जिज्ञासा एक प्रकार का चुम्बक होता है जो बिखरे ज्ञान रूपी लोहे के कणों को अपनी और खींचता रहता है। चारों तरफ फैले ज्ञान रूपी कणों को ग्रहण कर अपने ज्ञान के भण्डार को बढ़ाता रहता है। इसी को ध्यान में रखते हुए श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज में जिज्ञासा ज्ञान एवं स्रोत केन्द्र की स्थापना शैक्षणिक सत्र 2015-16 में की गई थी।

पुस्तकालय के अन्तर्गत पाठ्य सामग्री संग्रह में धर्म-दर्शन, समाज विज्ञान, मानविकी, विज्ञान एवं तकनीकी प्रबन्धन, सूचना प्रौद्योगिकी, हिन्दी, संस्कृत भाषाओं के साथ इतिहास, जीवनियाँ, व्यक्तित्व विकास एवं प्रतियोगी परीक्षापयोगी पाठ्यसामग्री का पर्याप्त संग्रह है, जिसमें 12500 ग्रन्थ है। पुस्तकालय के सन्दर्भ कक्ष में विश्वकोश, शब्दकोश, जीवनी कोश, तकनीकी शब्दावली, मानचित्र, गजेटियर्स, वार्षिकी, निर्देशिका, चित्रावली, जिल्द-प्रतिवेशन एवं सी.डी. आदि लगभग 2000 सन्दर्भ ग्रन्थों का संग्रह है। पुस्तकालय के वाचनालयकक्ष में हिन्दी-अंग्रजी भाषा में साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक एवं अर्द्धवार्षिक आदि आवृत्ति की 68 पत्र-पत्रिकाएँ, जर्नल्स, हिन्दी व अंग्रेजी के कुल 10 प्रमुख स्थानीय एवं राष्ट्रीय समाचार पत्र उपलब्ध है।

ई.आर.पी. पर आधारित पुस्तकालय में सॉफ्टवेयर पर संग्रहीत सभी ग्रन्थों का बुक डेटा प्रविष्टि का कार्य निरन्तर प्रगति पर है। कम्प्यूटर नेटवर्किंग की व्यवस्था करके पाठकों को ग्रन्थ खोज, ऑनलाईन जर्नल्स एवं अन्य सुविधा प्रदान की गई है। पुस्तकालय के ई-लाइब्रेरी में 10 कम्प्यूटरों को संग्रहीत किया गया है, यहाँ पर पाठक आकर इन्टरनेट पर सूचनाओं को सर्च कर सकते हैं। इसमें शिक्षाकों के द्धारा तैयार किए गए ई-नोट्स को भी एक्सेस कर सकते हैं। इस सुविधा को इन्स्टीट्यूशनल डिपोस्ट्री का नाम दिया गया है।

पुस्तकालय के द्धारा डेलनेट, नई दिल्ली एवं ब्रिटिश पुस्तकालय, नई दिल्ली की सदस्यता होने का प्रस्ताव है, इसके द्धारा पाठकों को ई-जर्नल्स, ई-मैगज़ीन, ई-बुक की विशिष्ट सुविधाओं को प्रदान किया जाएगा एवं इसके साथ ही अन्तर पुस्तकालय आदान-प्रदान (ILL) की सुविधा भी प्राप्त होगी, जो पुस्तकें हमारे पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है उनको विद्यार्थी प्राप्त कर सकेंगे।

पाठक संवाद योजना के अन्तर्गत पुस्तक समीक्षा, चित्रावली का आयोजन एवं किसी भी विषय पर पाठकों का मत भी लिया जाता है। श्रेष्ठ पाठकों को पुरस्कृत किया जाता है। पुस्तकालय के द्धारा ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करने के लिए समर रीडिंग क्लब की स्थापना की जा रही है, जिसमें किशनगढ़ तथा इसके आस-पास के 9-12 तक के छात्र-छात्राएँ, कन्याऐं एवं प्रबुद्धजन इसकी सदस्यता लेकर पुस्तकालय में सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

डॉ.कपिल सिंह हाडा
पुस्तकालयाध्यक्ष

पोषक तत्वों का खज़ाना मशरूम

सफेद मशरूम को वनस्पति जगत में ''एगैरिकस बाइस्पोरस'' नाम से जाना जाता है। इन्हें सामान्य रूप से वनस्पति श्रेणी में रखा गयाहै। यह एक खाने योग्य कवक है। यह उच्च पोषक तत्वों और स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ के रूप में भोजन का एक अच्छा विकल्प है ।

मशरूम में उपस्थित पोषक तत्त्व :

1. मशरूम वसा रहित, कोलेस्टॉल रहित तथा ग्लूटन रहित खाद्य पदार्थ है। इसमें सोडियम कम मात्रा में तथा प्रोटीन, अमीनो एसिड, डाइटरी फाइबर, विटामिन (ए,सी,डी, ई, के, बी6, बी12) खनिज (कैल्शियम, आयरन, मैगनीशियम, जिंक, कॉपर, सोडियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम) और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में होते हैं।
2. मशरूम विटामिन-डी का अच्छा स्त्रोत है। यह विटामिन-डी की कमी को दूर करता है जो आजकल की बेहद आम समस्या है । यह कोशिका वृद्धि नियमन में सहायता कर कैंसर की वृद्धि को रोकता है।
3. मशरूम में उपस्थित कई विटामिन ब्रेनफॉग और थाइरॉइड विकृतियों को भी रोकते हैं।
4. मशरूम कॉपर तत्त्व का अच्छा स्त्रोत होने के कारण रक्त कोशिकाओं के उत्पादन और कोलेजन (एक प्रकार का प्रोटीन जो हमारी हड्डियों को टूटने से बचाता है) के निर्माण में भी सहायक है।
5. कैल्शियम तत्त्व उपस्थित होने के कारण मशरूम रक्त से लौह (Fe) के अवशोषण को बढ़ाने एवं इसके संचालन में मदद करता है। मशरूम में फॉस्फोरस की उपस्थिति के कारण यह हड्डियों के लिए अच्छा है क्योंकि हड्डियों को मजबूत बनने वाले ये अकार्बनिक खनिज उत्तकों की मदद करते है इसी प्रकार फॉस्फोरस डी.एन.ए. निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण हैं ।
6. मशरूम में विभिन्न प्रकार के फिनोलिक यौगिकों सहित बहुत से द्वितीयक मेटाबोलाइट्स पाये जाते हैं जो विशिष्ट एंटीऑक्सीडेंट गुणों को प्रदर्शित करते हैं।
7. मशरूम में सिलीनियम की उपस्थिति के कारण यह किलर टी-सेल, बी एवं टी लिम्फोसाइट कोशिकाओं के उत्पादन को बढ़ाता है और फ्री- रेडिकल क्षति से भी बचाता है। यह यकृत एन्जाइम क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है एवं कुछ कैंसर कारकों के प्रभाव को काम करके ट्यूमर वृद्धि सूजन और जलन को रोकता है, इस प्रकार प्रतिरक्षा तंत्र के संतुलन में सहायक होता है ।
8. मशरूम सिलीनियम एंटीऑक्सीडेंट की मदद से उम्र के प्रभाव को कम करता है ।
9. मशरूम शरीर में जर्मेनियम की पूर्ति करता है। यह एक ऑसीजनवर्धक तत्त्व है जो कि फ्री-रेडिकल डैमेज से लड़ता है ।
10. मशरूम में कुछ प्रभावी फाइटोन्यूट्रिएट्स होते हैं जो रक्त कोशिकाओं को रक्त कोशिका भित्तियों से चिपकने से बचाता है और रक्त दाब एवं रक्त संचार के स्वस्थ संचालन के लिए महत्त्वपूर्ण होता है ।
11. मशरूम महत्त्वपूर्ण रूप से एक प्रतिशोध (ऐंटीइंफ्लेमेट्री) कारक के रूप में सक्रिय होता है जो दमा, गठिया, आर्थराइटिस, किडनी फेल्योर और स्ट्रोक डैमेज से पीड़ित मरीजों के लिए अच्छा है।
12. मशरूम दीर्घकालिक रोगों से लड़ने में भी सहायक है।

मशरूम द्वारा मोबाइल फोन बैट्री का निर्माण

अभी हाल ही में अमेरिका के एक इंजिनियरिंग कॉलेज के कुछ अनुसंधानकर्ताओं ने पोर्टबेलो मशरूम लीथियम आयन बैट्री बनायी और बताया कि किस प्रकार शात्विक नैनों कणों को मशरूम से जोड़कर एक लंबे समय तक चलने वाली बैट्री बनायी जा सकती है क्योंकि बैटरी में लिथियम आयनों को संचित करने के लिए कार्बन आवश्यक है और मशरूम में उपस्थित कार्बन फाइबर्स को कोबाल्ट ऑक्साइड कणों से जोड़ने पर एक मिश्रित डिजाईन तैयार होता है । जिसमें कार्बन फाइबर्स और कोबाल्ट ऑक्साइड कण एक साथ क्रिया कर आयनों एवं परिवहनीय इलेक्ट्रोन्स को रोकने में समर्थ होते हैं। अभी तक लीथियम आयन बैट्रियों को कृत्रिम ग्रेफाइट की मदद से बनाया जाता था जिसके शोधन एवं निर्माण प्रक्रिया में हाइड्रोक्लोरिक और सल्फ्यूरिक एसिड जैसे रसायनों का प्रयोग होने के साथ ही यह कीमती और पर्यावरण प्रतिकूल भी था।

मशरूम में अधिक कार्बन की उपलब्धता इसकी कम कीमत और पर्यावरण अनुकूलता इसे ग्रेफाइट का एक अच्छा विकल्प बनाती है। इन बैट्रियों का जैव निम्नीकरण भी आसानी से हो सकता है।

गीता पालीवाल
वनस्पति विज्ञान विभाग

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में उपग्रहों का बढ़ता वर्चस्व

वर्तमान अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कृत्रिम उपग्रहों पर निर्भर है । कृत्रिम उपग्रह मानव निर्मित ऐसे उपकरण हैं, जो पृथ्वी की निश्चित कक्षा में परिक्रमा करते है । अपने संतुलन को बनाए रखने के लिए ये उपग्रह अपने अक्ष पर ही घूमते रहते हैं । कृत्रिम उपग्रह अंतरिक्ष में कुछ प्रमुख उद्देश्यों के लिए प्रक्षेपित किए जाते हैं ।

15 फरवरी 2017 को एक साथ 104 उपग्रह प्रक्षेपित करके भारत ने विश्व कीर्तिमान बनाया। इस अभियान में भेजे गए 104 उपग्रहों में से तीन भारत के हैं । जबकि बाकी के 101 सैटेलाइट्स इज़राइल, कज़ाकिस्तान, नीदरलैंड, स्विटज़रलैंड और अमरीका के हैं।

हम पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भर हैं परन्तु हम इसे सहजता से स्वीकार नहीं करते। इस विचार को समझने के लिए आये हम एक ऐसे दिन की कल्पना करते हैं जब उपग्रहों ने अचानक ही काम करना बंद कर दिया हो।

सुबह के 8 बजे हैं मोबाइल में नेटवर्क नहीं है न ही किसी से बात हो पा रही है । टेलीविजन में भी प्रसारण नहीं है। यह सब तो सिर्फ हमारे आवास में आई थोड़ी सी परेशानियां है परन्तु दुनिया एक बहुत बड़े खतरे का सामना करने वाली है।

वैश्विक उपग्रह संचार का नुकसान, दुनिया को खतरे में डाल रहा है । कहीं एक बंकर में, एक पायलट स्क्वाड्रन ने मध्य पूर्व में उड़ने वाले सशस्त्र ड्रोन के साथ संपर्क खो दिया।

सुरक्षित उपग्रह संचार प्रणालियों की विफलता के कारण सैनिकों, जहाजों और विमानों खतरे में पड़ गए। उपग्रहों के बिना, विश्व के नेताओं ने बढ़ते वैश्विक तनाव के बारे में विचार विमर्श करने में परेशानियाँ आ गई । महासागरों के ऊपर पायलटों ने हवाई यातायात नियंत्रण से बात करने के लिए संघर्ष किया। उपग्रह फोन के बिना, आर्कटिक में कंटेनर जहाजों, चीन सागर में मछुआरों और सहारा में सहायता श्रमिकों दुनिया के संपर्क से कट गए।

11 बजे तक उपग्रह प्रणाली के ठप हो जाने से जीपीएम (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) रुक गया। जीपीएस ने हमें किसी दुर्गम स्थान तक पहुँचाया है। जीपीएस ने डिलीवर कंपनियों के जीवन को बदल दिया, आपातकालीन सेवाओं की घटनाओं में तेजी से पहुँचने में मदद की, विमानों को अलग-अलग रनवे पर लैंड करने और ट्रकों, ट्रेनों, जहाजों और कारों को ट्रैक और पता लगाने के लिए सक्षम बनाया गया । जीपीएस उपग्रह अंतरिक्ष में बेहद सटीक घड़ियों से थोड़ा अधिक है, एक समय में एक संकेत को यह उपग्रहों की सहायता से पृथ्वी पर वापस भेजते हैं।

दिन के 2 बजे इंटरनेट का रोकना शुरू हो गया, संचरण नेटवर्क को संतुलित करने के लिए संघर्ष करना पड़ा । कम्प्यूटरीकृत जल उपचार कार्यो पर, इंजीनियरों ने मैनुअल बैक-अप सिस्टम पर स्विच किया जो कि पहले उपग्रहों की मदद से चल रहे थे। शाम 5 बजे तक बड़े शहरों में ट्रेफिक लाइट और रेल्वे सिग्नल लाल रहने लगे, वायु व अन्य महत्त्वपूर्ण परिवहन साधन ठप हो गए। आतंकवाद का खतरा मंडराने लगा । कई अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों की सुरक्षा खतरे में पड़ गई है। हर तरफ अफरा तफरी मच गई।

ऐसे दिन की कल्पना हमें भयभीत कर देती है जिस में न कोई सुनियोजित संचार का माध्यम हो न ही परिवहन की सुविधा। यह सब हो इसकी संभावना निश्चित रूप से, अविश्वसनीय रूप से कम है लेकिन निश्चित रूप से हमें बड़े पैमाने पर वेब की सराहना करनी होगी जो हमारी दुनिया को परस्पर हर क्षण घेरे हुए है। उपग्रहों की कल्पना करना अब असंभव सा प्रतीत होता है।

रोहिणी यादावर
भूगोल विभाग

गणित के रोचक तथ्य

1. क्या आपको पता है कि 111, 111, 111 x 111, 111,111=12,345,678,987,654,321, होता हैं।
2. आपने कभी इसे ट्राय किया है– 1086 x 9 = 9801
3. यदि आप "PIE" यानी (3:14) को लिखकर उल्टी तरफ से देखेंगे तो आपको "PIE" लिखा हुआ ही नज़र आयेगा।
4. 259 x 9 x आपकी उम्र = तीन बार आपकी उम्र
5. यदि आप z = त्रिज्या और A को एक पिज़ा की मोटाई मान लें तो उसका आयतन = Pi x z x zx A होगा।
6. 2520 एक ऐसा सबसे छोटा अंक है जो 1 से लेकर 10 तक सभी अंकों से पूरा विभाजित हो सकता है।
7. पुरातन बेबीलोन के लोग गणित को 10 के बजाय 60 के आधार पर करते थे, इसी वजह से वृत्त में 360 डिग्री ओर 1 मिनट में 60 सैकण्ड होते हैं।
8. 21978 को 4 से गुणा करने पर उत्तर इस संख्या का उल्टा 87912 प्राप्त होगा।
9. Isaac Newton's के Mathematic सिद्धांत में एक छोटी सी गणना गलत थी लेकिन 300 साल तक इस पर किसी का ध्यान नहीं गया।
10. सूरजमुखी की कुंडली जैसी संरचना Fibonacci Sequence को Follow करती है।
11. जीरो (0) अकेला ऐसा अंक है जिसे हम रोमन में नहीं लिख सकते।
12. हम विषम संख्या को Male और सम संख्या को Female सोचते है।
13. 10! सैकण्ड पूरे 6 हफ्तों के बराबर है अर्थात् 10! = 10 x 9 x 8 x 7 x 6 x 5 x 4 x 3 x 2 x 1 = 3628800 सैकण्ड, जो कि 42 दिन यानि 6 हफ्तों के बराबर है।
14. किसी भी संख्या का प्रतिशत (%) निकालना बहुत आसान है, जैसे 400 का 30% निकालने के लिये दोनों संख्या को 10 से विभाजित करने पर जो आएगा उसे आपस में गुणा करें अर्थात् (3 x 40= 120) 120, ही 400 का 30% है।
15. (6 x 9). (6 x 9) = 69
16. 1900 में पूरी दुनिया की गणितीय जानकारियों को सिर्फ 80 किताबों में लिखा जा सकता था, लेकिन आज ये 1 लाख से भी ज्यादा किताबें भर सकती है।

खुशबू जांगिड़
द्वितीय वर्ष

गणित में पंक्ति सिद्धांत परिचय एवं उपयोगिता

वर्तमान की इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में सेवा प्राप्त करने हेतु इन्तज़ार करना एक सामान्य प्रक्रिया है। हमें अपने दैनिक जीवन में ऐसी कई परिस्थितियाँ देखने को मिलती है जहाँ मनुष्य किसी न किसी रूप में सेवा प्राप्त करने हेतु इन्तज़ार कर रहा है। तब हमारे सामने कुछ प्रश्न खड़े हो जाते हैं। जैसे–

1. हम इन्तज़ार क्यों करें?
2. हमें कब तक इन्तज़ार करना होगा?
3. हम किस प्रकार से सेवा प्रदान करने की सुविधाओं को सुधार सकते हैं?

उपर्युक्त सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही गणितीय विधि द्वारा दिया जा सकता है, वह है पंक्ति सिद्धांत। पंक्ति सिद्धांत प्रतीक्षारत पंक्ति का एक गणितीय अध्ययन है जिसका उपयोग आज हम अपने दैनिक जीवन में कई जगह करते हैं। दैनिक जीवन में हम रेल्वे टिकट खिड़की, सिनेमा हॉल की टिकट खिड़की, आरक्षण कार्यालय, पेट्रोल पम्प, टोल बूथ, अस्पताल आदि स्थानों पर मनुष्यों की पंक्ति या कतार देखते हैं।

सर्वप्रथम टेलीफोन कॉल की समस्याओं में पंक्ति गुणधर्मो पर सैद्धांतिक शोध अरलेंग ने 1905 में किया था। सन् 1951 में डी.जी. केन्डाल ने पंक्ति समस्याओं पर योजनाबद्ध तरीके से अध्ययन किया। वर्तमान विभिन्न क्षेत्रों में पंक्ति सिद्धांत का प्रयोग अत्यधिक हो रहा है।

जब एक सेवा हेतु मांग सेवा देने वालों की चालू क्षमता से अधिक होती है तो ऐसे स्थानों पर सेवा प्राप्त करने वालों को पंक्ति या कतार में खड़े होकर इन्तज़ार करते हुए अपनी–अपनी बारी आने पर सेवा प्राप्त करनी पड़ती है। इसे ही सामान्यत: पंक्ति सिद्धांत कहते हैं।

परिभाषा: ''सेवा प्राप्त कर रहे तथा प्राप्त करने हेतु इन्तज़ार कर रहे मनुष्य या वस्तुओं के एक समूह को पंक्तिया प्रतिक्षारत कहते हैं।''

पंक्ति में सेवा प्राप्त कर रहें या सेवा प्राप्त करने हेतु इन्तजार करने वाले व्यक्ति ग्राहक कहलाते हैं तथा जिस व्यक्ति द्वारा सेवा दी जाती है उसे सेवक कहते हैं। इस प्रकार पंक्ति सिद्धांत एक ऐसी गणितीय तकनीक है जिसके द्वारा ग्राहक तथा सेवक के मध्य एक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है तथा कम से कम समय में ग्राहक को सेवा प्रदान की जा सकती है।

पंक्ति सिद्धांत के उद्देश्य: कई स्थानों पर ग्राहकों की भीड़ ज्यादा होने पर सेवा केन्द्र खोलने से खर्चा बढ़ जाता है तथा ग्राहकों की इन्तज़ार में सेवा केन्द्र खाली रहे तो फिजूल खर्च बढ़ जाता है। अत: पंक्ति सिद्धांत का उद्देश्य इष्टतम सेवा काल तथा ग्राहकों को आगमन दर ज्ञात करना है जिससे लागत न्यूनतम हो।

पंक्ति सिद्धांत, पंक्ति अनुशासन पर कार्य करता है अर्थात् प्रतीक्षारत व्यक्तियों का सेवा हेतु चयन निम्न पंक्ति अनुशासन के अन्तर्गत किया जाता है –

1. FCFS (प्रथम आगमन, प्रथम सेवा) जैसे टिकट खिड़की पर प्रतीक्षा पंक्ति
2. LCFS (अन्तिम आगमन, प्रथम सेवा) बड़े–बड़े गोदामों में यह अनुशासन अक्सर देखने को मिलता है जहाँ बाद में रखा सामान पहले उठाया जाता है।

इस प्रकार पंक्ति सिद्धांत वस्तुओ अथवा मनुष्यों का एक ऐसा व्यवस्थित समूह है जो सेवा प्राप्त करे हेतु कतारबद्ध या पंक्तिबद्ध है।

अत: पंक्ति सिद्धांत के मुख्य तीन भाग है–(1) प्रतिक्षा कक्ष, (2) ग्राहक, (3) सेवा प्रदाता

पंक्ति सिद्धांत ग्राहक का व्यवहार :

1. Balking : जब पंक्ति की लम्बाई ज्यादा हो अर्थात् पंक्ति बहुत बड़ी हो तथा व्यक्ति के पास इन्तज़ार करने हेतु समय ना हो तो वह व्यक्ति पंक्ति को छोड़कर चला जाता है।
2. Reneging : जब सेवा प्राप्त करने हेतु खड़ा व्यक्ति अधैर्यता के कारण पंक्ति को बीच में छोड़कर चला जाता है।
3. Jockeying : जब सेवा प्राप्त करने हेतु एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति में चला जाता है।

उपयोगिता :– पंक्ति सिद्धांत की उपयोगिता निम्न क्षेत्रों में है–

1. टोल बूथ
2. अस्पताल में मरीजों की पंक्ति
3. टैक्सी स्टेण्ड
4. कम्प्यूटर क्षेत्र
5. टिकट खिड़की (रेल्वे अथवा बस स्टेण्ड)
6. मशीनरी समस्या
7. बैंक

निष्कर्ष : यह कहा जा सकता है कि पंक्ति सिद्धांत सुनने, पढ़ने व समझने में सरलतम लगता है परन्तु इसकी गम्भीरता से विचार किया जाये तो इससे जटिल प्रक्रिया नहीं हो सकती। आप विचार कीजिए जब प्रथम बार इस सिद्धांत से युक्त समस्याओं का समाधान करने का प्रयास जिसके द्वारा किया गया उसने कितना सोचा होगा और इस बिन्दु तक पहुँचा होगा। यदि हम इन छोटी – छोटी बातों को ध्यान में रखे तो यह सिद्धांत अपने सरलतम स्वरूप में हमारा साथ निभाता है इस पर शोध अनवरत जारी है।

प्रवीण देवड़ा
गणित विभाग

क्षेत्र अनुभव और सामाजिक यथार्थ : सामाजिक सर्वेक्षण के संदर्भ में

समाज में अनेक सामाजिक समस्याएँ, मुद्दे और चुनौतियाँ विद्यमान है और इनके बारे में जानकारी प्राप्त करने अथवा हमारे सामान्य बोध का निर्माण करने में सामाजिक परिवेश की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारा यह सामान्य बोध समाज के सामान्य सदस्य के रूप में सामाजिक और प्राकृतिक दुनिया के बारे में हमारी धारणा या सहज ज्ञान को प्रतिबिम्बित करता है। वास्तविकता में किसी भी सामाजिक समस्या, चुनौती और मुद्दे पर अवबोध और चर्चा करने के लिए सामान्य बोध से वैज्ञानिक बोध की ओर परिवर्तन आवश्यक हो जाता है ताकि हम दृढ़ता से तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टि से अपने विचारों को प्रस्तुत कर सकें। विद्यार्थी भी समाज का एक अभिन्न अंग है अत: उनके विचारों में भी सहज और सामान्य बोध स्पष्टत: परिलक्षित होता है । ऐसी स्थिति में सामाजिक सर्वेक्षण के सशक्त माध्यम से विद्यार्थियों को क्षेत्रीय अनुभव द्वारा सामान्य बोध से वैज्ञानिक बोध, वास्तविकता और यथार्थता के निकट लाने का अवसर प्रदान किया जा सकता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के विद्यार्थियों ने ढाणी पुरोहितान गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक सर्वेक्षण किया । सर्वेक्षण पर जाने से पूर्व विद्यार्थियों द्वारा उत्तरदाताओं से जानकारी एकत्रित करने के लिए एक अनुसूची निर्माण का निर्माण किया जिसके माध्यम से मुख्यत: उन्होंने सर्वेक्षण के क्षेत्रों के निर्धारण के आधार, खुले और बन्द प्रश्नों की रचना एवं विविध कथनों का निर्माण आदि को सीखा । इसके साथ ही क्षेत्र अध्ययन के समय प्रत्युत्तर प्राप्त करने से पूर्व उत्तरदाता से संवाद करने के गरीमामय तरीकों पर भी चर्चा की गयी ताकि सरलता से अनुसूची के प्रश्नों के जवाब प्राप्त हो सके, जो कि सर्वेक्षण का आधारस्तम्भ है। इसके पष्चात् विविध समूहों के रूप में विद्यार्थियों ने गाँव में जाकर वहाँ के लगभग 70 परिवारों की स्थिति और सामाजिक सांस्कृतिक मुद्दों को जानने का प्रयास किया जिसमें विशेष तौर पर गाँव के निवासियों की पारिवारिक स्थिति, आय, प्रमुख व्यवसाय, जाति और धर्म, संतान और उनकी शिक्षा आदि मुद्दों से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित किया । गाँव के सामाजिक मुद्दों में परिवार का स्वरूप और विविध सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ सांस्कृतिक मुद्दें जैसे भाषा, गहने, पहनावा, उत्सव और त्योहार, टेलीविजन का समाज पर प्रभाव आदि से प्रदत्तों का संकलन किया । इस दौरान विद्यार्थियों ने क्षेत्र और वहाँ के राजकीय विद्यालय का भी अवलोकन कर वहाँ की यथार्थता को गहनता से समझने का प्रयास किया।

अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थियों ने सर्वेक्षण के अनुभवों को साझा किया और उस क्षेत्र से प्राप्त तथ्यों का प्रस्तुतीकरण भी दिया। उन्होंने यह माना कि क्षेत्र अनुभव से उन्हें समाज की यथार्थता को जानने और समझने का एक अवसर मिला और साथ ही इसके माध्यम से वे समाज के बारे में अपने सामान्य विचार, धारणा, पूर्वाग्रह और मिथक की समालोचना भी करने में सक्षम हो सकते हैं । इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सामाजिक सर्वेक्षण के द्वारा सरलता से किसी भी क्षेत्र की वस्तुस्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं की यथार्थता को जाना और समझा जा सकता है।

डॉ. मितेश जुनेजा
समाजशास्त्र विभाग

अब कौन बनेगा किसान?

पिछले दिनों फिर एक बार सुर्खियों में आया कि फसलें बर्बाद होने और कर्ज़ से परेशान 13000 किसानों ने आत्महत्या की हैं। परन्तु जब मामला संसद में गूंजा तो एक बार फिर से राष्ट्रीय किसान आयोग की कही गई बात पर बहस हुई कि भारत में तकरीबन 7 प्रतिशत किसान खेती छोड़ने के लिए तैयार हैं । सारी किसान आबादी कर्ज और घाटे की खेती से परेशान हैं । नया युवक इस खेती के धंधे में नहीं आना चाहता । सारे ग्रामीण लोग शहरों की और भाग रहे हैं और जो बचे हैं, वे आत्महत्या कर रहें हैं।

NSRB के आंकड़े बताते हैं कि 1995 से 2015 तक देश में 3 लाख 12 हजार किसानों ने आत्महत्या की। मोटे तौर पर भारत में सबको अन्न देने वाला यह अन्नदाता मर रहा है। उसे भी गाँवों की असुविधाओं से मुक्ति चाहिए । अगर गाँव में रोजगार के साधन नहीं होंगे, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी तथा उपयोगी संसाधन नहीं होंगे तो विस्थापन तो होगा ही। आज़ादी के बाद सारी विकास की योजनाएँ शहरों को केन्द्र में रखकर की गई और किसानों तथा कृषि प्रधानों के नारे संसद तक ही सीमित रह गए। आज भी सरकार का सारा ध्यान शहरों पर ही केन्द्रित है। इसका ही परिणाम है कि 3 लाख 12 हजार किसानों ने आत्महत्या करनी पडी और गरीब 30 करोड़ लोगों ने भागकर शहरों का सहारा लिया।

आखिर क्या कारण है कि किसान खेती से बाहर आना चाहते हैं? इस पर विचार होना ही चाहिए।

यह सत्य है कृषि में कोई भी फसल अब घाटे का सौदा हो गई है। आज कोई भी किसान अपने बच्चों को किसान बनाना नहीं चाहता, गाँव से जो निकल नहीं पा रहे, केवल वही कृषि व्यवस्था में अटके हैं।

अगर 130 करोड़ जनता को अन्न चाहिए तो अन्नदाता को गाँव में रोकना होगा, उसे बेहतर जीने के अवसर देने होंगे, जैसे दुनिया के विकसित राष्ट्र अपने किसानों को देते हैं, वैसी व्यवस्था लानी होगी नहीं तो एक दिन सारी कृषि भूमि विदेशी कम्पनियों को उनका हक दिला सको, तो ही इस देश में अन्नदाता भी खुशहाल होगा, और तब ही हम गर्व से सीना तानकर कह सकेंगे : जय जवान-जय किसान!।

करूणा राजपुरोहित
उपाध्यक्ष, छात्रसंघ
प्रथम वर्ष, कला वर्ग

मेरा महाविद्यालय : मेरे अनुभव

संगीत का मतलब मेरे लिए कोई काम या समय व्यतीत करना ही नहीं है बल्कि संगीत मेरे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। इसे मैं भगवान का आशीर्वाद या मेरे अच्छे कर्मो का फल मानती हूँ कि मैं रागों के रस, स्वरों की श्रुतियों को महसूस करती हूँ, उन्हें समझती हूँ, लेकिन संगीत समुद्र के अथाह क्षेत्र में मेरा अनुभव मात्र एक बूंद के समान है। हमारे इस महाविद्यालय में अनेक असंख्य सकारात्मक शक्तियाँ हैं जो मुझे सदैव संगीत की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। मेरा एक प्रयास विश्वविद्यालय में संगीत प्रतियोगिता को देखते हुए उस समय सफल हो गया जब मेरे गुरूजनों ने अपनी सकारात्मक प्रेरणा से संगीत से जुड़ी गायन प्रतियोगिता में भेजा। मुझे स्वयं पर यह विश्वास नहीं था कि इतनी बड़ी प्रतियोगिता, इतने अनुभवी संगीतकार और कुशल गीतकारों के बीच स्वयं को सफल कर पाऊँगी या नहीं? पर कहते हैं कि यदि कर्म में निष्ठता हो ओर बड़ो का मार्गदर्शन हो तो कोई कार्य असफल नहीं हो सकता, ऐसा ही सफलतम आशीर्वाद मुझे मिला और मैं विश्वविद्यालय गायन प्रतियोगिता में सफल हो सकी।

बस मेरी संगीतमय यात्रा यहीं तक ही नहीं है, मुझे एक बार पुन: ऐसा ही अवसर एस. एस.जी. पारीक कॉलेज, जयपुर में अंतर विश्वविद्यालय संगीत प्रतियोगिता में गायन का मिला जिसमें मेरे प्रेरणास्प्रद गुरु व महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा प्रदत्त आत्मविश्वास ने प्रतिस्पर्धा तक पहुँचाया। वहाँ पर भी प्रदेश के जाने-माने संगीतकारों के सामने स्वयं को प्रतिस्पर्धा में सफल पाया इससे बड़ी प्रसन्नता और क्या हो सकती है? अपने संगीत क्षेत्र को पुष्ट करना और उसमें स्वयं को काबिल बनाने का जो श्रेय है वो मेरे गुरु को तो है ही साथ ही महाविद्यालय का योगदान शब्दों से बयां करने में असक्षाम हूँ। इस महाविद्यालय ने मुझे सकारात्मक परिवेश प्रदान किया मेरे लिए यह गौरव की बात है। मुझे विश्वास है कि इन्हीं प्रेरणाओं से मै अवश्य एक दिन संगीत में स्वयं को सफल पाऊँगी।

वन्दना जांगिड़
द्वितीय वर्ष
कला वर्ग

मेरा श्रम ही मेरा कौशल

मैं बेहद खुश हूँ कि मुझे मेरे शौक और काबिलियत को पहचान देने के लिए सभी का सहयोग मिला। मेरा मानना है कि हम सभी को अपने जीवन में अपनी रुचि के अनुसार ही काम करना चाहिए जिससे हमें पहचान ही नहीं, बल्कि खुशी भी मिले। अत: यह एक इतफाक ही था जब मैंने मेरी सहेली के लिए एक हेण्डीक्राफ्ट कार्ड बनाया और उन्होंने बिना बताए इसे युट्यूब जैसी प्रसिद्ध साइट पर सब्स्क्राइब किया और मुझे प्रोत्साहन दिया। जब यह बात मेरे कॉलेज के दोस्तों, सहपाठियों और शिक्षकों को ज्ञात हुई तो उन्होंने मुझे शाबाशी दी और इसे आधिकारिक रूप करने हेतु प्रोत्साहित किया। मैं विशेष रूप से अपने माता-पिता को इस सफलता का श्रेय देती हूँ जिन्होंने हर समय मेरा साहस बढ़ाया। यह हेण्डीक्राफ्ट कार्ड, विभिन्न डिज़ाइन्स्, पज्ज़ल कार्ड, स्क्रब बुक, बॉक्स कार्ड, फोटो एलबम जिसे हम अपने दोस्तों परिजनों और अन्य लोगों को देकर उन्हें ख़ास महसूस करवा सकते हैं। शादी, जन्मदिन, नववर्ष या अन्य किसी भी मौके पर इन कार्ड्स को देकर उन्हें आकर्षित या लमहों को यादगार बना सकते हैं।

अत: हमारा ध्येय है कि शिक्षा के साथ साथ में ऐसा हुनर होना चाहिए जिससे हम केवल प्रोत्साहित ही न हो बल्कि आत्मनिर्भर बन सके और एक विश्वास के साथ आगे बढ सके।

शैली कोचेटा
द्वितीय वर्ष
बी.बी.ए.
Youtube Channel
(Shaily Kocheta Creation)

पी.एस.एल.वी.- सी 37

पी.एस.एल.वी.सी 37, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान द्धारा संचालित पी.एस.एल.वी.श्रृंखला का एक उपग्रह प्रमोचन वाहन है जिसने 15 फरवरी, 2017 को कुल 104 उपग्रहों को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित करके एक नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया । भारत के 714 किलोग्राम वजन वाले पृथ्वी अवलोकन उपग्रह (कार्टोसैट-2 डी) और 664 किलोग्राम वजन के 103 अन्य सहायक उपग्रहों के साथ सतीश धवन स्पेस सेंटर के प्रथम लॉन्च पैड से सुबह 9 बज कर 28 मिनट (आई. एस.टी.) पर रवाना हुआ। ये उपग्रह अनेक देशों के हैं। पी.एस.एल.वी. की यह कुल 39 वीं और 37 वीं सफल उड़ान थी। अभी तक किसी भी देश ने इतनी संख्या में उपग्रहों का एक साथ प्रक्षेपण नहीं किया है। पिछला रिकॉर्ड रूस के नाम था। रूस ने नेपर रॉकेट से 2014 में एक साथ 37 सैटेलाइट लॉन्च कर वर्ष 2013 में मिनटॉर 1 से 29 सैटेलाइट्स। एक साथ छोड़ने के अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के रिकॉर्ड को तोड़ा था। इसरो भी 2016 में 20 उपग्रह एक साथ लॉन्च कर चुका है।

लॉन्च :- 14 फरवरी को प्रक्षेपण के लिए उल्टी गिनती शुरू की गयी, जहाँ चार रॉकेट में प्रणोदक भरने का काम हुआ। 14 फरवरी, 2017 मंगलवार को सुबह 5:28 बजे इसे शुरू किया गया। मिशन रैडिनेस रिव्यू कमेटी तथा लॉन्च ऑथराइजेशन बोर्ड ने 13 फरवरी की रात ही 28 घंटे की उल्टी गिनती की मंजूरी दे दी थी जो मंगलवार, 14 फरवरी सुबह 5:28 बजे शुरू हो गयी। 44.4 मीटर लंबे पी.एस.एल.वी.-सी 37 की भार ढ़ोने की क्षमता 320 टन है और ठोस स्ट्रेप- ऑन मोटर के उपयोग के साथ एवसएल प्रारूप में यह इसकी 16वीं उड़ान थी। सहयात्री उपग्रहों में 101 नैनो उपग्रह शामिल थे जिनमें इजराइल, कजाकिस्तान, नीदरलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, संयुक्त अरब अमीरात के तथा 96 सैटेलाइट अमेरिका के थे। साथ ही, भारत के दो नैनो उपग्रह आई.एन.एस.-1 ए तथा आई. एन.एस.- 1 बी भी शामिल थे। इन सभी उपग्रहों का कुल भार 1378 किलो ग्राम था। रॉकेट की उड़ान सोलह मिनट में खत्म होने की उम्मीद थी। उपग्रह उसके बाद अलग होने लगे। मोटे तौर पर यह दस मिनट की अवधि में शुरू हुआ। कार्टो सैट-2 डी पहले तैनात किया गया, इसके पीछे नैनो सैटेलाइट कक्षा में छोड़े गये। नैनो सैटेलाइट को क्वॉपैक डिस्पेन्सर में पैक किया गया था। पूरे ऑपरेशन के 28 मिनट तक खात्म हो जाने की उम्मीद थी। इस मिशन की कुल लागत 15 मिलियन डॉलर है, इसरो के अनुसार इस मिशन का आधा बजट विदेशी उपग्रहों के लॉन्च से निकलेगा।

काजल कुमावत
भौतिक विज्ञान विभाग

मैं अभी थकी नहीं हूँ

मैं अभी थकी नहीं हूँ,
चलने का हौसला रखती हूँ,
जमीं पर कदम मेरे,
आसमाँ पर नज़र रखती हूँ।
चलते जाना है मेरी फितरत,
मुझे कहाँ रुकना है,
मैं बदली में छुपे,
सूरज की किरण रखती हूँ।
मैं थकी नहीं हूँ,
चलने का हौसला रखती हूँ।
मैं हौसलों से कूदती हूँ तूफानों में,
क्योंकि मैं उन्हें जीतने का हुनर रखती हूँ।
छोड़ दूँ चलना राह के काँटे देख,
चूंकि मैं साथ अपने,
काँटों की चुभन रखती हूँ।
जिंदगी तुझे देना है जो दर्द दे ले,
मैं भी इसे सहन का हुनर रखती हूँ।
मैं कभी थकी नहीं हूँ,
चलने का हुनर रखती हूँ।
जो पार लगा दे कश्ती,
मैं वो लहर रखती हूँ।
क्योंकि मैं अभी थकी नहीं हूँ,
मैं चलने का हौसला रखती हूँ।

नेहा शर्मा
कनिष्ठ लिपिक

पोषक तत्वों सम्बन्धित भ्रांतियाँ एवं निवारण

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वास्थ्य सिर्फ रोग या दुर्बलता की अनुपस्थिति ही नहीं है बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खुशहाली की स्थिति है। परन्तु आजकल की दौड़ धूप भरी जिन्दगी में हम न तो अपने शरीर की ओर ध्यान दे पाते हैं और न ही अच्छे पोषण की ओर। आज के दौर में हम पोषण से अधिक भोजन में स्वाद को अधिक महत्त्व देते हैं जिसके कारण हम अधिक बिमारियों से घिरे रहते हैं। जो भी भोजन हम ग्रहण करते हैं उसमे कुछ ऐसे पोषक तत्त्व जैसे क्रार्बोज, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज पदार्थ आदि पाये जाते हैं। जो हमारे शरीर के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक होते हैं, अत: हमें रोज़ हमारे शरीर के लिए समतोल आहार लेना चाहिए। अच्छे एवं संतुलित आहार के द्वारा हम पोषक तत्त्वों की कमी से होने वाली बिमारियों से बच सकते हैं अपितु हम अच्छा स्वास्थ्य भी बनाये रख सकते हैं। अगर हम रोजाना के भोजन में पाँच खाद्य समूह का ध्यान रखे तो हमें कभी भी कोई पोषक तत्त्व की कमी नहीं हो सकती। परन्तु हमारे समाज में कुछ संबंधित भ्रान्तियाँ हैं जिनकी वजह से लोग अच्छे एवं पौष्टिक भोजन से वंचित रह जाते हैं जैसे गर्भावस्था के दौरान गर्भवती कन्या को कुछ फल एवं सब्जियों का सेवन नहीं करने दिया जाना, पर ऐसा नहीं है क्योंकि इन्हीं फलों एवं सब्जियों में कुछ ऐसे विटामिन एवं खनिज पदार्थ पाये जाते हैं जो शिशु के विकास के लिए अति आवश्यक होते हैं और ऐसा करने से हम माँ एवं शिशु दोनों का ही नुकसान पहुँचाते हैं।

हमारे समाज में यह भी एक भ्रांति हैं कि भोजन को अधिक पकाने से उसका स्वाद बढ़ जाता है। परन्तु हमें यह नहीं पता कि स्वाद तो हमने बढ़ा दिया पर भोजन में प्रस्तुत सारे आवश्यक पोषक तत्त्वों को नष्ट कर दिया। भोजन को जितना कम पकायेंगे उतना ही हम पोषक तत्त्वों को नष्ट होने से बचा सकते हैं। भोजन में अगर हम अंकुरीकरण, खमीरी– करण आदि विधियों का प्रयोग करें तो हम उनमें पोषक तत्त्वों की वृद्धि कर सकते हैं। जैसे अनाज एवं दालों को अंकुरित करके, उसमें विटामिन सी की मात्रा बढ़ा सकते हैं, जो कि अनाज एवं दालों में नहीं होता है।

अच्छा एवं पौष्टिक भोजन हमारे शरीर के लिए आवश्यक है अत: हमें भोजन ग्रहण करते समय एवं पकाते समय उसमें प्रस्तुत पोषक तत्त्वों का ध्यान रखना चाहिए, तभी हम एक अच्छे जीवन को जीने में सक्षम हो सकते हैं।

रूचि माथुर
गृह विज्ञान विभाग

जी.एस.टी. का परिचय एवं लाभ

जी.एस.टी. को इस दशक का सबसे अहम् आर्थिक सुधार माना जा रहा है। जी.एस.टी. लागू होने के बाद वस्तुओं और सेवाओं पर अलग-अलग लगने वाले सभी कर एक ही कर में समाहित हो जाएंगे। इससे पूरे देश में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें लगभग एक हो जायेगी। मैन्युफैक्चरिंग लागत घटेगी, जिससे उपभोक्ताओं के लिए सामान सस्ता होगा। अप्रत्यक्ष की इस नई व्यवस्था को 60 लाख करोड़ रुपये का फायदा होगा।

क्या है जी.एस.टी.? जी.एस.टी. एक वैट है जो वस्तुओं और सेवाओं दोनों पर लगेगा! मौजूदा दौर में वैट सिर्फ वस्तुओं पर लागू होता है। जी.एस.टी. दो स्तरों पर लगेगा एक केन्द्रीय जी.एस.टी. होगा जबकि दूसरा राज्य का। इससे पूरा देश एकीकृत बाजार में तब्दील हो जाएगा और ज्यादातर अप्रत्यक्ष कर जी.एस.टी. में समाहित हो जाएंगे।

क्या होगा फायदा? केंद्र के स्तर पर यथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सेवा कर और अतिरिक्त सीमा शुल्क और राज्य स्तर पर वैट, मनोरंजन, विलासिता, लॉटरी टैक्स और बिजली शुल्क का समाहित कर लगेगा। केन्द्रीय बिक्री कर (सी.एस.टी.)खात्म हो जाएगा। प्रवेश शुल्क और चुंगी भी खात्म हो जाएगी अलग-अलग टैक्स की बजाय एक टैक्स लगने की वजह से वस्तुओं के दाम घटेंगे और आम उपभोक्ताओं को फायदा होगा। सरकार की टैक्स वसूली की लागत भी घट जाएगी। जी.एस.टी. दर का खुलासा नहीं हुआ है।

अविनाश तोतलानी
वाणिज्य संकाय

वर्तमान कर

किसी वस्तु को राज्य के अन्दर बेचा गया जैसे –

अजमेर से जयपुर

मूल्य – रु 1000 वैट/ 10%– 100

उसी वस्तु को राज्य से बाहर बेचा गया जैसे –

जयपुर से अहमदाबाद

कीमत ₹ 1100

मुनाफा ₹ 1000

बेचने का मूल्य ₹ 2100

सी.एस.टी.-10% ₹ 210

कुल मूल्य ₹ 2310

जी.एस.टी.

किसी वस्तु को राज्य के अन्दर बेचा गया जैसे

अजमेर से जयपुर

मूल्य – रु 1000

सी.जी.एस.टी./5%– रु 50

एस.जी.एस.टी./5%– रु 50

उसी वस्तु को राज्य से बाहर बेचा गया जैसे :–

जयपुर से अहमदाबाद

कीमत ₹ 1100

मुनाफा ₹ 1000

बेचने का मूल्य ₹ 2100

1 जी.एस.टी./10% ₹ रु 110

210–सी.जी.एस.टी.

एस.जी.एस.टी.

कुल मूल्य ₹ 2210

विश्व पटल पर गणतंत्र का इतिहास

इतिहासविद्दों का मानना है कि सम्पूर्ण विश्व में गणतंत्र की शुरुआत बिहार के वैशाली से हुई है। इसके पुख्ता प्रमाण हेतु भारतीय पुरातत्व विभाग की टीम ने बिहार के वैशाली गढ़ में खनन कार्य करवाया जिससे इस बात के ठोस प्रमाण मिले हैं कि सम्पूर्ण विश्व में वैशाली ही प्रथम गणतंत्र रहा है। इतिहासकारों के अनुसार विशालगढ़ की स्थापना राजा विशाल ने की जो वैशाली ग्राम में स्थित है विशालगढ़ 81 एकड़ के क्षेत्र में विस्तारित है जिसे एक प्राचीन संसद (सभा भवन) का अवशेष माना जाता है। उत्खनन में शुंग वंश के समय की मिट्टी से बनी प्राचीन सुरक्षा दीवार मिली है जबकि कुषाण काल में इसके उपर पक्की ईटों का घेरा बनाये जाने का स्पष्ट प्रमाण है।

ए.एस.आई. के प्रभारी एस. के. मंजुल का मानना है कि वैशाली में उत्खनन से सबसे बड़ा निष्कर्ष सामने आया है उनके अनुसार ''खनन से मिली वस्तुएँ वैशाली को प्राचीन लिच्छवी गणतंत्र से जोड़ती है यहाँ देवी-देवताओं की मूर्तियाँ नहीं मिलने से धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र का आभास होता है।''

इतिहासकारों एवं शोध अध्येताओं का मानना है कि उत्खनन में प्राप्त अवशेष मौर्य काल से पूर्व के है जो कि अद्भुत है। इस उत्खनन से कई आश्चर्यजनक पुरातात्विक वस्तुएँ प्राप्त हुई जिनके माध्यम से इतिहासविद् एवं छात्र नवीन जानकारी से लाभान्वित हो सकते हैं साथ ही प्राचीन संसद के विषय में जानकर अपने ज्ञान में नवीन अभिवृद्धि भी कर सकेंगे।

सिमरन शर्मा
द्वितीय वर्ष
कला वर्ग

हमारे पथ-प्रदर्शक

माता-पिता एवं गुरू हमारे भविष्य निर्माण के प्रथम पर्यवेक्षक ही नहीं अपितु प्रथम निर्माता होते हैं। उनके चरणों से प्राप्त अनन्त आशीर्वाद रूपी शक्ति के आगे सम्पूर्ण संसार सागर के कष्ट छोटे से ताल तलैया को पार करने के समान दृष्टिगोचर होते हैं। यदि हम अपने जीवन के समस्त महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए मन मन्दिर को अपने गुरू एवं माता-पिता की सच्ची सेवा कि ओर लगाये तो निश्चित ही एक दिन विशिष्ट शक्ति को प्राप्त करते हुए, राष्ट्र के लिए एक प्रेरक नागरिक के रूप में ख्याति प्राप्त कर सकते हैं।

अमित दाधीच
प्रशासनिक अधिकारी

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ

भारतीय समाज में छोटी बच्चियों के खिलाफ भेदभाव और असमानता की ओर ध्यान दिलाने के लिये बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ नाम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा एक सरकारी सामजिक योजना की शुरुआत की गयी है। हरियाणा के पानी पत में 22 जनवरी, 2015, बुधवार को प्रधानमंत्री के द्वारा इस योजना की शुरुआत हुई। ये योजना समाज में लड़कियों के महत्त्व के बारे लोगों को बताने के लिये आम लोगों के बीच ये जागरूकता बढ़ाने का कार्य करें, गीत था। इसमें एक लड़के की भाँति ही एक लड़की के जन्म पर खुशी मनाने और उसे पूरी जिम्मेदारी से शिक्षित करने के लिये कहा गया।

इस योजना की शुरुआत की जरुरत 2001 सेंसस के आँकडों के अनुसार हुई, जिसके तहत हमारे देश में 0 से 6 साल के बीच का लिंगानुपात हर 1000 लड़कों पर 927 लड़कियों का था। इसके बाद इसमें 2011 में और गिरावट देखी गयी तथा अब आँकड़ा 1000 पर 918 लड़कियों तक पहुँच चुका था।

2012 में यूनिसेफ द्वारा पूरे विश्वभर में 195 देशों में भारत का स्थान 41 वाँ था। इसी वजह से भारत में कन्याओं और लड़कियों की सुरक्षा के प्रति लोगों की जागरुकता जरूरी हो गयी। ये योजना कन्या भ्रूण हत्या को जड़ से मिटाने के लिये लोगों से आह्वान भी करती है।

इस कार्यक्रम की शुरुआत करते समय प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय लोगों की ये सामान्य धारणा है कि लड़कियाँ अपने माता–पिता के बजाय पराया धन होती है। अभिभावक सोचते है कि लड़के तो उनके अपने होते है जो बुढ़ापे में उनकी देखभाल करेंगे जबकि लड़कियाँ तो दूसरे घर जाकर अपने ससुराल वालों की सेवा करती है। लड़कियों के बारे में 21वीं सदी में लोगों की ऐसी मानसिकता वाकई शर्मनाक है और जन्म से पूरे अधिकार देने के लिये लोगों के दिमाग से इसे जड़ से मिटाने की जरूरत है।

लड़कियों की दशा को सुधारने के लिये पूरे देश के 100 जिलों में इसे प्रभावशाली तरीके से लागू किया गया है, सबसे कम स्त्री–पुरूष अनुपात होने की वजह से हरियाणा के 12 जिलों (अंबाला, कुरूक्षेत्र, रेवाड़ी, भिवानी, सोनीपत, झज्जर, रोहतक, करनाल, यमुनानगर, पानीपत, और कैथाल) चुना गया।

लड़कियों की दशा को सुधारने और उन्हें महत्व देने के लिये हरियाणा सरकार 14 जनवरी को 'बेटी की लोहड़ी' नाम से एक कार्यक्रम मनाती है। इस योजना का उद्देश्य लड़कियों को सामाजिक और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना है जिससे वो अपने उचित अधिकार और उच्च शिक्षा का प्रयोग कर सकें। आम जन में जागरूकता फैलाने में मदद करता है साथ ही कन्याओं को दिये जाने वाले लोक कल्याणकारी सेवाएँ की कार्यकुशलता को भी बढ़ाएगा। लड़कियों के लिये मानव की नकारात्मक पूर्वाग्रह को सकारात्मक बदलाव में परिवर्तित करने के लिये ये योजना एक रास्ता है।

डॉ. रूचि मिश्रा
राजनीति विज्ञान विभाग

RENDEZVOUS WITH AMMA

A heart warming conversation with Ms. Shashikala Agarwal.

> ***"I did something for someone...such thought should never cross my mind. I believe that I'm a mere channel. Everything good that I do flows through me but the ultimate source is God, the almighty."***

There is nothing special about Ms. Shashikala at first glance. She looks like an average Indian woman in her seventies dressed in a simple sari. But as you move closer and discover more about her, you will know that she's not an ordinary person. People in Kishangarh fondly call her Amma because of her life long devotion towards needy and poor. She's a philanthropist who believes in the philosophy of "give and don't tell". Her inspiring life story and thoughts are full of ancient wisdom.
Following is an extract of the conversation between Amma and two of our student correspondents, Komal and Akshata.

What inspired you to help others?
I got married when I was 16, that was in the year 1952. 3-4 years after that I started my work for the less fortunate people. My husband was the president of rotary club, so he conducted many medical camps, and I used to help him by giving my selfless services to the patients. I would make tea and bread or assist them to the washrooms. My maternal grandmother and mother have been my motivation to embark on this life long journey.

Can you tell us about your formal education?
I've received a very humble education. I'm just 12th pass. As was the custom during my time, I got married really early while I was still studying.

Please tell us something about your work.
Initially I helped people to get their pension from government offices. After that I organized 2-3 service camps. Next I began providing help to old women and widows. Now I make chapattis, dal and vegetables and distribute it among the poor daily. I also provide some homemade remedies and medicines to sick people. During summers, I arrange water stalls at railway stations to provide chilled water for thirsty passengers.

What are the things that you dislike the most?
I hate wastage, be it in any form, especially that of milk. Second thing is pride. I did something for someone...such thought shall never cross my mind. I believe that I'm a mere channel. Everything good that I do flows through me but the ultimate source is God, the almighty.

How do you balance your personal and social life? Do you get full support from your family?
The thing is, when you love what you do, you will have the courage to face any problem in doing that, everything gets managed, every problem comes with a solution. God has always helped me...he is with me always. My family has always supported me in all my endeavors. My husband, sons and daughter-in-laws are proud of me and help me time to time.

How do you stay strong during tough situations?
I have experienced several situations in life which were not favorable to me. I have lost a daughter and a son. We have also seen days when we had nothing to eat. But even during such days, we never lost faith. We have managed to survive! Despite all this, no one has ever gone empty handed from our door.

Tell us about one thing that you see in people, which inspires you to continue your work ?
I meet so many people, I see their pain and this is what inspires me to help them. It is this simple and plain. When I'm capable to do something, no matter how small it is, I do it. Once I met a widow, who was crying out of helplessness. There was not much that I could do for her. I could only offer my words to soothe her. Trust me, at times this is the biggest help you can lend to someone.

What message will you give to our young generation?
Communicate with the people around you, especially those who are poor and helpless. Meet them with love, care and affection. Whenever you sit to eat always fold your hands in prayer, thank your God for the food, and say "I'm blessed to have good food to eat." Respect your elders and always remember if you help someone never make a big deal out of it.

Student Correspondents:
Komal Mehta (B.C.A. Part I),
Akshata Merathwal (B.Com. H. Part I)

LINGUA FRANCA: The Bridge Language

"The ENGLISH LANGUAGE is work in progress. Have fun with it."
- **Jonathan Culver**

Language has a life of its own. In its journey, starting from birth: it evolves, grows, adapts and eventually perishes. Nevertheless, there are some languages which transcend the barrier of time; prolong their lives and acquire the status of living and breathing languages. Unarguably, standing the test of time, the English Language falls under this category.

English was handed down to Indians during the British rule. It was the native language of the coloniser, passed on to the colonised. For this reason, it has long been branded with the sin of elitism and westernism in some pseudo-nationalist spheres of our society. Although, it is true that language carries the burden of culture and dominant ideology, the fact that their is something unique about English cannot be side-lined.

The uniqueness lies in the fabric of this language. The English language is highly mutable, adaptive and flexible, wherever it goes it has the tendency to assimilate the soul of the recipient culture in its texture. English is now considered as the Second Language in India; a second language is any language that one speaks other than one's first language (mother tongue).

The English which is spoken in India is different from that spoken in other regions of the world, and it is regarded as a separate entity which is called Indian English or Hinglish. The fabric of this language has assimilated itself in the contextual and cultured atmosphere of the regional Indian languages.

Globally it is emerging as lingua franca or the bridge language, which links people who have different mother tongues. But we need not go too far; in India English connects North to South and East to West, serving as a common language; due to variations in the regional languages.

With these trends, gone are the days when English was considered the language of the colonisers. Now it's the language of streets, spoken at every nook and corner of the world. No other language is global and local at the same time.

So no matter what is your mother tongue, learn English, play with it, try different pronunciations and grammar rules and stick to the standard when necessary. English belongs to you as much as to the native speakers. Don't believe me, then pay heed to Derek Walcott when he says, "The ENGLISH LANGUAGE is nobody's special property. It is the property of the IMAGINATION: it is the property of the language itself."

Niharika Sharma
Lecturer
Department of English

TO BELIEVE

To believe is to know that every day is a new beginning. It is to trust that miracles happen and dreams do really come true.

To believe is to know the value of innocence of a child's eyes and the beauty of an aging hand, for it is through teaching we learn to love.

To believe is to find the strength and courage that lies within us. When it is time to pick up the pieces and begin again.

To believe is we are not alone, that life is a gift and this is our time to cherish it.

To believe is to know that wonderful surprises are just waiting to happen. And all our hopes and dreams are within reach.

If only we believe!

-Kritika Maheshwari (B.C.A. Part I)

ENHANCE YOUR EMPLOYABILITY SKILLS

To constructively fill in the increasing gaps between graduate workplace performance and employer expectations, developing certain skills at undergraduate level has become a necessity to enhance employability profile. The need of an hour says that you must possess some specific skill sets to differentiate yourself from competitors vying for similar job profiles.

Here are some useful preparation tips which can transform you into an ideal job applicant:

1. SELF-MANAGEMENT

- Have clear goals to work on
- Learn to prioritize your work
- Make to do lists, set schedules and avoid procrastination
- Deal with stress in healthy ways

2. COMMUNICATION SKILLS

- Read newspaper, magazines, books that interest you
- Join a book discussion group
- Participate in literary activities as debates, extempore, elocution.
- Contribute to college magazine and newsletter

3. LEADERSHIP AND ORGANISATION SKILLS

- Get onto the organising committees, events and activities
- Participate in student council elections
- Volunteer yourself for social work

4. TEAMWORK

- Participate in extracurricular activities, student clubs, sports and games

5. LIFELONG LEARNING

- Sit for long hours in library for reading
- Take extra assignments for home
- Travel to broaden your horizon

6. PROFESSIONALISM

- Start blog writing and make your presence online
- Sign up on LinkedIn
- Join summer internship

7. PROBLEM SOLVING & DECISION MAKING SKILLS

- Solve case studies
- Learn vedic mathematics to master logical reasoning

8. SUBJECT SPECIFIC KNOWLEDGE

- Always ask questions to keep the fundamentals clear
- Read encyclopedia to learn related terminologies
- Practice your subject

9. STAY UPDATED

- Participate in quiz
- Read newspaper and magazines
- Subscribe to news channels on social networking platforms

Preeti Saluja
Lecturer,
Department of Commerce

ERP: Inspire, Initiate, Innovate

Educational Institution today demand complete management solutions that are flexible enough to accommodate dynamically changing needs. ERP enables organizations to manage IT costs, optimize efficiency, streamline management and processes, eliminate manually-intensive reporting, and improve productivity.

Because expectations for improved performance are always increasing, we at Shri Ratanlal Kanwarlal Patni Girls' College, Kishangarh continue to think more creatively about how our people, processes, and technology can work together more efficiently.

ERP provides everything any educational institution need to establish efficient processes and gain transparency into day to day operations. In addition to standard functionality, flexible workflow tools are incorporated to customize processes and multi-faceted support

Our ERP system supports this view by helping institutions build, manage, and extend our digital campus. It enables our individuals, systems, and communities to interact seamlessly across campus in an environment where efficiency, service delivery, and personalized educational experiences propel desired outcomes.

With an ERP system we have gain a community where students get the services they demand, faculty facilitate teaching and learning in the classroom or online, and departmental staff have the information and support to be more effective.

Rajendra Chaturvedi
IT Head

CAMPUS DIARIES

A Homemaker's English Language Learning Quest

-Ms. Gudiya Bansal

"We all have dreams. But in order to make dreams come into reality, it takes an awful lot of determination, dedication, self-discipline, and effort." - Jesse Owens

English has become a status symbol in our society. So naturally, those who cannot speak and understand English, feel inferior. Housewives (read Homemakers) like me, have many reasons to choose English Learning Classes - to be a part of social gatherings, husband's business parties, attend PTMs, help kids with their homework and most importantly to develop a good personality.

That being the case, I decided to join " Communication Skills and Spoken English Classes" at Shri Ratanlal Kanwarlal Patni Girls' College, under the guidance of Ma'am Sakshi. The innovative training modules used in these classes acquainted me with the four basic skills of English: listening, speaking, reading and writing. It was a path breaking assimilation with a variety of innovative ideas and activities. I learned the English language with fun activities such as shadow exercises, topic writing, image interpretation, debates, group discussions, role plays, etc. We brushed our grammar, vocabulary building, presentation skills; considered extremely important to achieve good command over the English Language.

I also want to thank the college for providing us with an excellent opportunity in a small town of Kishangarh. In the disciplined environment of this college I acquired the confidence to speak English fluently with the help of sophisticated facilities like Audio-Visual Teaching Aids, Language Lab and Reading Room.

I take a pledge to continue reading, speaking and writing in English

Ms. Gudiya Bansal is a homemaker from Kishangarh, who attended Communication Skills and Spoken English Course at Shri Ratanlal Kanwarlal Patni Girls' College

On Learning Something New

When it was first announced, we were a bit curious about the "Theatre and Drama Workshop" and had many questions in our mind. Hesitation mixed with excitement was visible on all the faces. Nevertheless, we decided to try something new, just for fun.

Initially, on the first day (July 28th, 2016), all of us were nervous and had no idea about what we were doing for the first few minutes during the workshop. Our trainer and guide Mr. Neeraj Kadela (Theatre & Film Artist) made us aware about the different types of theatre and acting techniques such as 'Aangik', 'Vachik', 'Aaharya' and 'Saatvik'. We learned about various pitches of sound that can be produced using our hands and voice modulation.

We did mirror exercises to control our body movements and to coordinate with our partners through gestures, an essential aspect of the stage presence. By the end of the day, with the help of these interesting activities we came out of our shells, becoming comfortable to make all the silly noises and funny facial expressions. On the final day, we were divided into two groups and proudly presented street plays on "Female Trafficking" and "Domestic Violence". This workshop helped us to boost our confidence and motivated us to do every work without any hesitation. We were grateful to Sir Neeraj, a person full of life with a treasure of knowledge on theatre and drama.

Ruchi Jain
B.B.A. II SEM.

Salutations,

BECAUSE I'M A GIRL

Because I'm a girl,
I must stick to my goals.
I don't need a defender,
I must never surrender.

Yes, I'm expressive, emotional
and sensitive. Compassion is
My virtue. Perfection, I Pursue.
I can be angry, passionate and
Prudent. Try not define me.
I wonder free.

Because I'm a girl,
I Have the strength to defeat
From your head to your feet.
Deep inside the hollows of
This world, I continuously grow
Whether it is rain, night or sorrow
When difficulties seem hard to cope,
Thereby strongest is my hope.

Because I'm a girl,
There is nothing I can't achieve,
And that's what I sincerely believe!

Harshita Saxeria
B.Sc. Part II

Need a suggestion on what to read? Help is here, read

GITA KA GYAN FORTHE NEW AGE READER

Title: My Gita
Writer: Devdutt Pattanaik
First Published: 2015
Publisher: Rupa Publications
Pages: 248

'MY GITA' deals with the ancient knowledge of the *Bhagavad Gita*, a 700-verse Hindu scripture in Sanskrit that is part of the great Indian epic *Mahabharata*. It is written in the form of dialogue between Lord Krishna and Arjuna. Pattnaik's *Gita* is not an abridged translation of the Bhagavad Gita, rather it is a reinterpretation of the sacred wisdom for new age reader who would find it difficult to read Sanskrit.

According to the author the word 'Gita' is made up of two different words:

Geeta (song) + Tyaagi (hermit) = GITA

The author uses many *shlokas* from the *gita*, explains them according to his reasoning and logic.

I think, he did a great service to the society by presenting a complex text in a nutshell which is easy to understand even by a lay person. The interesting feature in the book is that it bridges the gap between ancient wisdom and modern anxiety. You will be able to connect with this book instantly, since it relates to the contemporary world view.

Read it once, I am sure this book has something for every person.

Vandana Jangid
B.A. Part II

मैं नहीं पहले आप

राष्ट्रीय सेवा योजना एक केन्द्र प्रायोजित योजना है। इस योजना की शुरुआत 1969 में की गई थी और इसका प्राथमिक उद्देश्य स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा के जरिये युवा छात्रों का व्यक्तित्त्व एवं चरित्र निर्माण था। एन. एस. एस. की वैचारिक अनुस्थापना महात्मा गाँधी के आदर्शों से प्रेरित है और इसका आदर्श वाक्य, ''मैं नहीं लेकिन आप'' है। एन.एस.एस. को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में कार्यान्वित किया जा रहा है। एन. एस. एस. की परिकल्पना में इस बात पर ध्यान दिया गया है कि इस योजना के दायरे में आने वाले प्रत्येक शैक्षिक संस्थान में एन.एस. एस. की कम से कम एक इकाई हो और उसमें सामान्यत: 100 विद्यार्थी स्वयं- सेवक हों। इस इकाई की अगुवाई एक शिक्षक करता है। प्रत्येक एन.एस.एस. की इकाई एक गांव अथवा मलीन बस्ती (स्लम) को गोद लेती है। एक एन.एस.एस. कार्यकर्ता को निम्न कार्य अथवा गतिविधियों को पूरा करना होता है।

नियमित एन.एस.एस. गतिविधि :- प्रत्येक एन. एस.एस. स्वयंसेवक के लिए दो वर्षो की अवधि में प्रतिवर्ष न्यूनतम 120 घंटे और दो वर्षो में 240 घंटे काम करना होता है। इस कार्य को अध्ययन की अवधि समाप्त होने अथवा सप्ताहांत के दौरान किया जाना है और एन.एस.एस. के विद्यालय, महाविद्यालय इकाई जिन गांवों अथवा स्लम को गोद लेती है वहाँ जाकर इन स्वयंसेवको को अपनी गतिविधियों को पूरा करना होता है।

विशेष शिविर कार्यक्रम :- प्रत्येक एन.एस.एस. इकाई जिन गांवों और शहरी स्लम बस्तियों को गोद लेती है वहाँ के स्थानीय समुदायों को शामिल करके कुछ विशेष परियोजनाओं के लिए सात दिन का विशेष शिविर आयोजित करती है। यह शिविर विद्यार्थियों की अवकाश अवधि के दौरान भी आयोजित किया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी स्वयंसेवक को दो वर्ष की अवधि में कम से कम एक बार इस तरह के विशेष शिविर में हिस्सा लेना अनिवार्य है।

एन.एस.एस. के तहत गतिविधियों का विवरण:- संक्षेप में एन.एस.एस. कार्यकर्ता सामाजिक प्रासंगिकता से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर कार्य करते हैं, जिसके जरिये समुदाय की आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया हासिल की जाती है। यह गतिविधियाँ नियमित एवं विशेष शिविर गतिविधियों के रूप में होती है। ऐसे विषयों में साक्षारता एवं शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं पोषण, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, कन्या सशक्तिकरण कार्यक्रम, आर्थिक विकासात्मक गतिविधियों से जुड़े कार्यक्रम, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत एवं बचाव कार्यक्रम आदि कार्य समाहित है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रतीक चिन्ह को उड़ीसा के सूर्य मंदिर के रथ चक्र को आधार बनाया गया। सूर्य मूलतः सृजन, संरक्षण, आवर्तन गतिविधियों तथा ऊर्जा का प्रतीक है जो काल को स्थान से परे जीवन को गतिशील बनाता है। इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह यह दर्शाता है कि युवकों को ऊर्जावान होकर ब्रह्माण्ड में परिवर्तन लाने और उसे उन्नत करने के लिए आठों प्रहर गतिमान रहना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक इस संकल्प के साथ प्रतीक चिन्ह् संयुक्त बैंच का धारण करते हैं कि वे दिन रात राष्ट्र की सेवा में उत्साह जीवंतता से सक्रिय रहेंगे।

राष्ट्रीय सेवा योजना का अपना एक सिद्धांत वाक्य है, ''मैं नहीं, पहले आप''। यह इस बात का प्रतीक है कि राष्ट्रीय सेवा योजना का स्वयं सेवक नि:स्वार्थ सेवा की आवश्यकता का समर्थन करता है। वह दूसरे के दृष्टिकोण की सराहना करता है तथा सम्पादित कार्य का श्रेय स्वयं न लेकर, दूसरों को देता है। यह समाज सेवा से जुड़ा कार्य हमारी महाविद्यालय इकाई द्वारा पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पादित किया जा रहा है।

अदिति बंसल
द्वितीय वर्ष
बी.बी.ए.

मातृभूमि के रक्षक

धर्मेन्द्र पारीक, डी.आई.जी.

सीमा सुरक्षा बल के उप महानिरिक्षक डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल धर्मेन्द्र पारीक अपने परिवार से मीलों दूर लगभग 30 वर्षो से देश की सेवा कर रहें हैं। डी. आई.जी. धर्मेन्द्र पारीक मूलत: किशनगढ़के निवासी है। प्रारम्भ से ही इनकी देशसेवा में बहुत दिलचस्पी रही है। यह एन.सी.सी. सीनियर विंग में बैस्ट कैडेट रहे हैं और अपने विश्वविद्यालयी अध्ययन में हर ऐथेलेटिक्स खेल में भाग लेकर प्रथम स्थान हासिल करते रहे हैं। उनके सम्बन्ध में एक रोचक बात यह है कि सेना से पूर्व वे रेल्वे स्टेशन मास्टर के प्रशिक्षण के लिए गए थे और इससे पहले अपने पिता के साथ चित्रकारी भी किया करते थे। मगर इन समस्त बातों से परे देश के लिए इनका प्रेम इन्हें देश सेवा तक ले ही गया और वे सेना में नियुक्त हो गए। सन् 1987 में वे सेना के सहायक कमाण्डर बने एवं निरन्तर पदोन्नति के माध्यम से सन् 2009 में डी.आई.जी. बने। इनकी उत्तम सैन्य कार्यशैली को देखते हुए सन् 1996 तथा सन् 2006 में इन्हें संयुक्त राष्ट्र पदक (यू.एन.मैडल) से नवाजा गया एवं राष्ट्रपति द्वारा, सन् 2007 में संयुक्त राष्ट्र कमिश्नर प्रशस्ति पत्र तथा सन् 2008 में सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक दिया गया। इसके अतिरिक्त इन्हें संयुक्त राष्ट्र महासचिव के विशिष्ट प्रतिनिधि द्वारा यू. एन. मिशन. उद्धरण पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

अभी हाल ही में इन्होंने सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान एक घुसपैठी आतंकवादी को पकड़ा और देशवासियों की रक्षा हेतु अपना सम्पूर्ण योगदान दिया। देश के ऐसे वीर सिपाही को हर देशवासी का सलाम।

हर्षिता सेक्सरिया
महासचिव, छात्रसंघ
द्वितीय वर्ष, विज्ञान वर्ग

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज,

अजमेर रोड़, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)305801

दूरभाष : 01463-307000, ई-मेल:info@rkgirlscollege.edu.in